वर्ष-3, अंक-10, अक्टूबर 2019
जे-7, श्रीररामनगर, रायपुर छ.ग.
आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

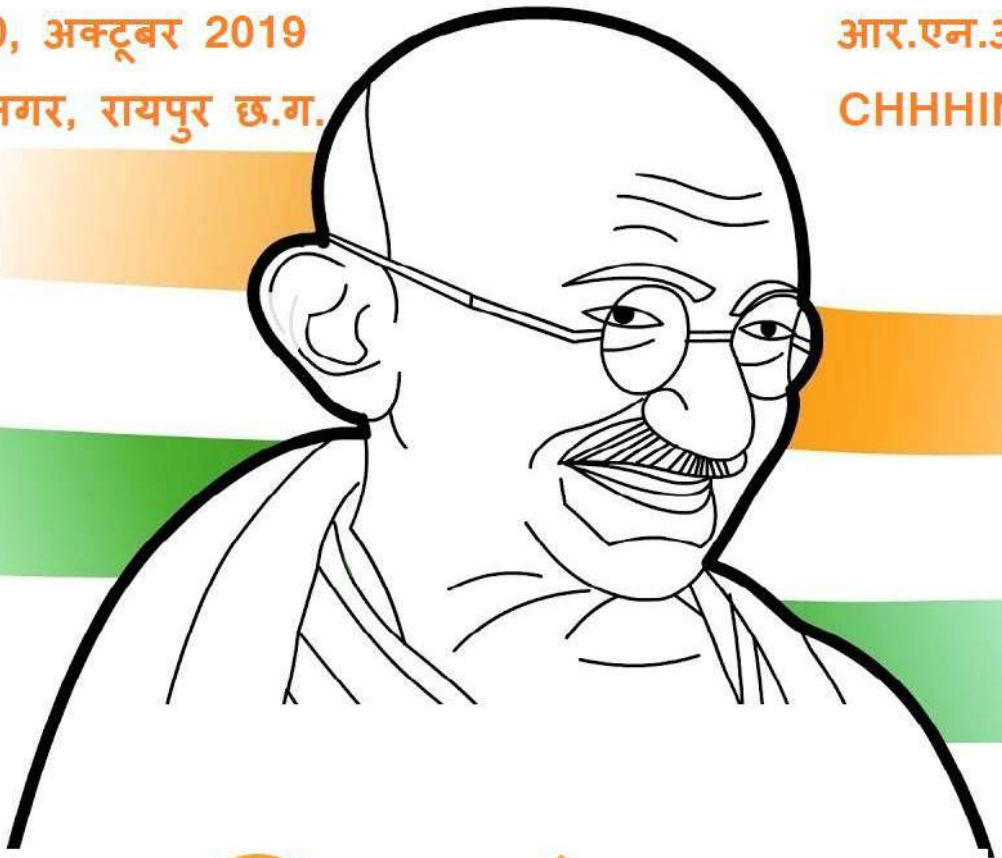

किलोल

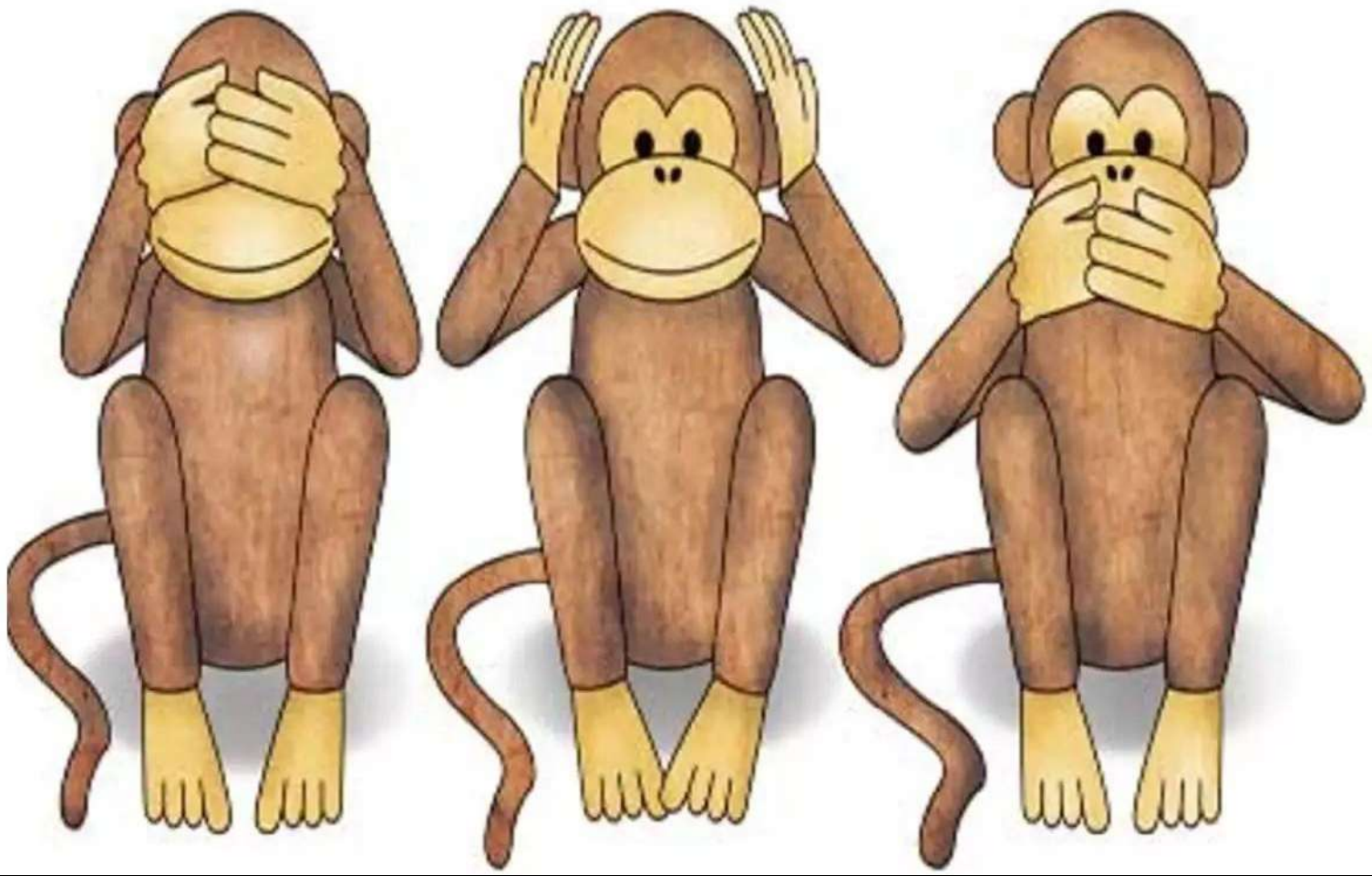

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

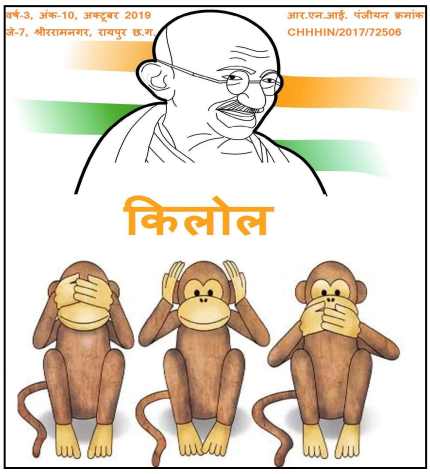

प्यारे बच्चों,

इस 2 अक्टूबर को हमारे प्रिय बापू, महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती है. गांधी जी ने न केवल भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में महान योगदान दिया बल्कि पूरे विश्व की एक पूरी पीढ़ी को सामाजिक न्याय, स्वच्छता, बुनयादी शिक्षा आदि के क्षेत्र में दिशा प्रदान की. इस अवसर पर आइये हम मिलकर महात्मा गांधी को नमन करें.

एक बार फिर किलोल के 500 से अधिक डाउनलोड होना पत्रिका में आपकी रुचि और बढ़ती लोकप्रियता का गवाह है. मैं आप सबका तहे दिल से धन्यवाद करता हूं. मुझे पूरी उम्मीद है कि आप अपने स्कूल के बच्चों को किलोल अवश्य पढ़ने के लिये दे रहे होंगे. मैं सुधीर श्रीवास्तव का विशेष आभारी हूं, कि उन्होने नंदा मैडम की कक्षा को पत्रिका के लिये लगातार धारावाहिक के रूप में लिखने की सहमति दी है. किलोल लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

बापू जी के नाम एक पत्र 5

नंदा मैडम की कक्षा (भाग-2) 8

नन्हा कौआ 15

सुराजी गाँव 17

जंगल में कृष्ण जन्माष्टमी 21

मजा आता है 23

हमारा शरीर और स्वास्थ्य 25

कहानी पूरी करो 27

राक्षस और राजकुमारी 27

अंजूलता भास्कर व्दारा पूरी की गई कहानी 28

इन्द्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 29

कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गयी कहानी 31

स्नो व्हाइट और सात बौने 31

चित्र देखकर कहानी लिखो 34

रानू और टीनू 34

अनजान बहादुरी 35

Beautiful Butterfly 38

Let's learn ! 40

सामान्य ज्ञान - तंग्राम 41

बाल कामिक्स 43

अजादी 47

अब्बड़ मज़ा आवय 49

इस पृथ्वी को चलो बचाएं 51

जिनगी हे अनमोल 56

तीज तिहार के भादों (लावणी छन्द) 58

ननपन के सुरता 60

नन्हीं कली 64
पानी हे जिनगानी 67
पितर के दिन आ गे 69
बड़ महत्त्व हे 71
बाल गणेश 75
बेटी के महिमा 79
बेशरम की आत्मगाथा 81
ममा के गाँव !! 82
मित्र 84
मेरी मां 86
ये देश है वीर जवानों का 91
वो चल देहे तीजा 94
सीख लूं 96
पहेलियाँ 100
मम्मी मुझसे रूठना मत 101
नवाचार - अगर मैं प्रधान पाठक होता तो क्या करता 103
नवाचार - पुस्तकालय 105
नवाचार - बाल सरंक्षण कार्नर 107
चित्र कविता - कुछ काम करो 109
आओ हंस लें 110
भाखा जनउला 112

बापू जी के नाम एक पत्र

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

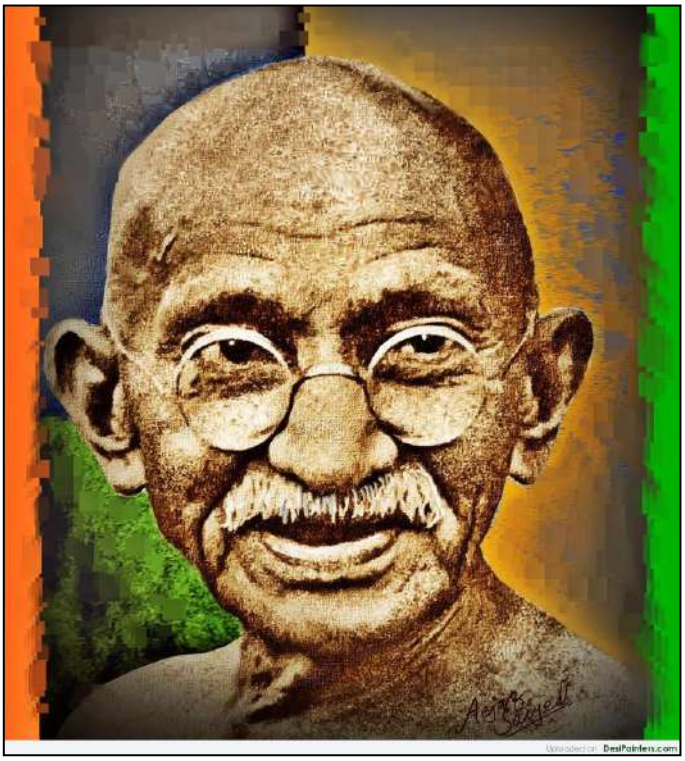

आदरणीय बापू जी,

पथ प्रदर्शक प्रिय बापू जी,
भारत माँ के प्यारे बापू जी.

आज मुझे पत्र लिखते इतनी खुशी हो रही है जिसको मैं शब्दो मे भी बयां नही कर सकता. आज मुझे कुछ कहने का सुनहरा मौका मिला है कि आप मेरे लिए कितना मायने रखते हो. आप तो हर भारतीय के दिल में बसते रहे हो.

आपका हर वाक्य हमारे लिए पथ प्रदर्शक की भाँति कार्य करता है. हम भारतीयों के लिए आपने क्या किया यह पूरा विश्व जानता है. आप हमें जज्बा प्रदान कर जीने की नई राह प्रदान करते रहे हो.

सोये मन में साहस भरते हुए युवा दिलों की धड़कन हो. मजहबो की दीवारो को तोड़ कर एकता का संदेश प्रदान कर हमें समतामूलक समाज मे जीने का हमारे हमेशा पथ प्रदर्शक रहोगे.

आपके व्दारा गाया गया प्रिय भजन है -

रघुपति राघव राजाराम,
पतित पावन सीताराम,
सबको सन्मति दे भगवान.

आप सभी जात पंथ मजहबो को सद्भावना के साथ रहने का संदेश देते हैं. आप महान हो, मेरे लिए भगवान हो. आपके कार्यो को विभिन्न पुस्तको के माध्यम से अच्छे से पढ़ने एवं समझने मुझे मौका मिला. आप सत्य-अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिये हर क्षण प्रेरित करते हो.

प्रिय बापू जी! आपने सन 1894 में दक्षिण अफ्रीका में हिंदुस्तानियों की रक्षा के लिए पहली बार सत्याग्रह चलाकर विजय प्राप्त की. उससे प्रेरणा लेकर आपने भारत मे भी सन 1917 में चम्पारण में किसानों के हित में सत्याग्रह का प्रयोग कर विजयश्री प्राप्त की. आपने सविनय अवज्ञा, डांडी मार्च, भारत छोड़ो आंदोलन सभी सत्याग्रह के रूप में ही लड़े. अपका बताया यही सत्य-अहिंसा का मार्ग हमारे समाज को सही दिशा में चलने को प्रेरित करता है. आज हमारे बीच न होने के बावजूद आप सभी के दिलो में बसते हो. आज भी आपके कार्य हमें साहस और संघर्ष सिखाते हैं.

मेरे प्रिय बापू जी!! आपने हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में भी बड़े काम किये. 20-21 दिसम्बर 1920 को प्रथम आपने छत्तीसगढ़ में प्रथम आगमन पर ही कंडेल नहर सत्याग्रह में भाग लेकर किसानों का मनोबल ऊँचा किया. 22-28 नवम्बर 1933 को सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हरिजन कल्याण के लिये छत्तीसगढ़ आकर हमें छुआछूत और भेदभाव की भावना को दूर करके सबको एक साथ मिलकर रहने का सन्देश दिया, जो आज भी सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है. बापू जी!! आपके आत्मबल और दृढ़इच्छा शक्ति के व्दारा ही यह संभव हो सका. हम आपके जैसे महान तो नही बन सकते लेकिन आपके जैसे बनने का हर संभव प्रयास तो कर ही सकते हैं.

आपके व्दारा कहे तीन वाक्यों - बुरा मत कहो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और आपके सादा जीवन, उच्च विचार के मंत्र से प्रेरणा लेकर हम भी अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं. बापू जी!! मैं भी आपकी लाठी को पकड़कर सत्य-अहिंसा के बल पर सदैव आपके समान बनने का प्रयास करता रहूंगा. आप मेरे पूज्यनीय हैं और सदैव मेरे हृदय में बसे रहोगे.

धन्य धन्य भारत भूमि में अवतार लिए बापू जी,
सत्य-अहिंसा के पथ चल आजाद किए बापू जी.

आपका स्नेहाभिलाषी
योगेश ध्रुव "भीम"

नंदा मैडम की कक्षा (भाग-2)

लेखक - सुधीर श्रीवास्तव

(पिछले अंक में आपने पढ़ा था कि नंदा ने किस तरह संख्या पद्धति की जटिल संरचना को आसान उदाहरणों से बच्चों के सामने रखा और संख्याओं को बनाने के क्रम में दस-दस के समूह बनाने की प्रक्रिया को अपने अध्यापन में सम्मिलित किया।)

नंदा को जैसी उम्मीद थी, बच्चों ने आज उससे बढ़कर काम किया था. कक्षा में आते ही नंदा ने देखा कि हर एक बच्चे के पास कुछ-न-कुछ चीजों की ढ़ेरियाँ रखी थीं. तरह-तरह के बीज, नदी की रेत से इकट्ठे किए गए रंग-बिरंगे पत्थर, सीपी, घोंघों के सूखे हुए खोल, बघनखे के लटकने वाले फल और भी न जाने क्या-क्या. उसे यह बात साफ समझ में आ रही थी कि बच्चों को थोड़ी सी भी स्वतंत्रता मिलती है, तो उनकी रचनात्मकता छलकने लगती है. बच्चों के पास रखी ढ़ेरियों को देखकर लग रहा था जैसे उन में यह बताने की होड़ लगी है कि उनकी चीज दूसरों से अलग है और विशेष भी.

नंदा दरवाजे पर ठिठकी सी खड़ी रही, बच्चे दौड़कर आए और उससे लिपट गए. “अरे छोड़ो .... छोड़ो’’ कहती रही नंदा और ऐसे ही बच्चे उसे अपने साथ कक्षा के अंदर ले आए.

“मैडम आज क्या करेंगे? ’’ कुछ बच्चे कूद-कूद कर ये पूछ रहे थे. नंदा ने झूठमूठ का गुस्सा दिखाते हुए कहा - “पहले तुम सब अपनी जगह पर बैठो और बिल्कुल चुप हो जाओ, तब बताऊँगी’’.

एक-डेढ़ मिनट में कक्षा एकदम शांत हो गई. बच्चों की आँखों से उत्सुकता झाँक रही थी. नंदा ने कहा - “कल तुम लोगों ने यह बताया था कि दस-दस के ढेर को मिलाते जाएँ, तो दस, बीस, तीस, चालीस बनते जाते हैं. आज हम देखेंगे कि इन ढ़ेरियों में थोड़ी और चीजें मिला दें, जैसे दस की तीन ढेरियों में पाँच चीजें और मिला दें तो कितने हो जायेंगे? इस पूरे को हम किस-किस तरह से बता सकेंगे और क्या इसका कोई अलग नाम भी है?''

नंदा ने देखा कि कुछ बच्चे उसकी तरफ एकटक देखे जा रहे थे. उनके चेहरे पर असमंजस के भाव थे. उसने कहा - “चलो इसे इस तरह समझते हैं.'' उसने एक बच्ची के पास रखे मटर के दानों में से मुट्ठीभर दाने उठाए और उन्हें अपनी टेबल पर रखा. एक बच्ची से उन्हें दस-दस की ढ़ेरियों में रखने के लिए कहा. बच्ची ने ऐसा ही किया. दस-दस की तीन ढेरियाँ बनीं और दो दाने शेष रह गए.

नंदा ने पूछा - “यहाँ मटर के कितने दाने हैं, कौन-कौन बता सकते हैं? '' कुछ बच्चों ने हाथ उठाए.

नंदा ने एक बच्चे से कहा - “अरविंद तुम बताओ. '' उसने एक-एक करके तीनों ढेरियों को गिना और फिर दो दानों को भी, और कहा - “दस, बीस, तीस और दो दाने याने बत्तीस''.

इतना होते-होते सभी बच्चे टेबल के इर्द-गिर्द जमा हो गए थे. नंदा ने कहा - “गुड! इस ढेर में चीजें दो तरह से रखी हैं. कोई बताएगा इनमें अलग-अलग बात क्या है? '' बच्चे सोच रहे थे. नंदा प्रतीक्षा कर रही थी.

दयानंद, जो अक्सर शांत रहता था, उसने कहा - “मैडम, गलत हो जाएगा तो? ''

“तो कोई बात नहीं. तुम्हारे मन में जो बात आ रही, वो बताओ बेटा''.

दयानंद की हिम्मत बढ़ी. उसने कहा - "यहाँ चार ढेर हैं. तीन में तो दस-दस मटर हैं, और एक में बस दो ही हैं. '' उसने अपनी आँखों में प्रश्न लिए नंदा की ओर देखा. शायद वह आश्वस्त होना चाहता था''.

नंदा मुस्कुरा उठी. उसने अपनी उगलियों से दयानंद की ठुड्डी पकड़ी. उसे दाएँ-बाएँ हिलाते हुए कहा - "एकदम सही मेरे बच्चे. ''

दयानंद के चेहरे पर खुशी आ गई. उसकी आँखों में आत्मविश्वास की झलक दिख रही थी और सभी बच्चों को दयानंद की कही बात समझ में आ गई थी. वे सभी देख पा रहे थे कि जितनी चीजों को बत्तीस गिनते थे, उसमें एक खास तरह की व्यवस्था है. नंदा को भी यह बात समझ में आ रही थी कि उसकी इस कोशिश का असर बच्चों के दिमाग पर पड़ रहा है और संख्या की एक अलग तस्वीर बननी शुरू हो रही है. उसने धीरे से पूछा - "क्या हम सभी अपनी-अपनी चीजों से बत्तीस चीजें अलग कर सकते हैं? ''

कुछ बच्चों ने धीरे से "हाँ'' कहा ..... कुछ ने हाँ में केवल सिर हिलाया, कुछ चुपचाप सोचते रहे. कक्षा में यह वह समय था जब सारे बच्चे किसी संख्या की इस नयी व्यवस्था को देखने, समझने और आत्मसात करने की मानसिक प्रक्रिया से गुजर रहे थे. नंदा सबकी अलग-अलग मनःस्थितियों को पढ़ने की कोशिश कर रही थी.

कक्षा में शांति थी. अभी कोई किसी से बात नहीं कर रहा था. हर एक बच्चा अपनी ढ़ेरियों से जुड़ गया था. हर एक के मन में 'बत्तीस' अपनी एक नयी छवि बना रहा था. नंदा उन्हें काम करते हुए उत्सुकता से देख रही थी.

थोड़ी ही देर में हर बच्चे ने इस संख्या को चीजों को रखने की एक खास व्यवस्था के रूप में प्रदर्शित कर लिया था. और अब समय था एक-दूसरे के काम को देखने का. प्रत्येक बच्चा आश्वस्त होना चाहता था कि जो उसने किया है, वह सही है.

इस बीच नंदा लगातार सोच रही थी कि अब आगे कैसे बढ़ूँ. बच्चों की कठिनाई यह है कि कोई संख्या बोलने पर वे उसे लिख नहीं पाते क्योंकि संख्याओं की पहचान का कोई तर्कसंगत आधार उनके पास नहीं था. उन्होंने संख्यओं को क्रम से बोलने की प्रक्रिया को दुहरा-दुहरा कर संख्याओं के नामों को क्रम से रट लिया था. अचानक उसे यह सूझा कि संख्या का नाम देकर संख्या को वस्तुओं के समूह व्दारा प्रदर्शित करने की प्रक्रिया को उल्टा कर दें तो बात बन जायेगी. याने पहले वस्तुओं के किसी समूह को दस-दस की ढ़ेरियों में व्यवस्थित करने को कहा जाए. फिर इन समूहों को गिनकर बची हुई चीजों को गिनने को कहा जाए. हाँ, यही ठीक रहेगा. इससे बच्चे सही संख्या नाम तक पहुँच जाएँगे, क्योंकि उन्हें दस, बीस, तीस गिनना तो आ ही गया है. और उन्हें क्रम से गिनती बोलना भी आता है. बस यही किया जाए.

नंदा के मस्तिष्क में एक विचार तो स्पष्ट हो गया था. अब उसे करके देखने की जरूरत थी. यह देखना था कि यह तरीका कारगर हो पाता है या नहीं. उसने देखा बच्चों ने अपनी संकलित चीजों से बत्तीस को व्यक्त करने का काम कर लिया था. यह थोड़ा आसान था क्योंकि उसने मटर के दानों का उपयोग करके पहले एक प्रदर्शन तो कर ही दिया था. अब कठिनाई के स्तर को थोड़ा सा बढ़ाया जाए. यह सोचकर उसने बच्चों से कहा - "चलो, एक और संख्या पर हम काम करते हैं. मैं तुम्हें संख्या का नाम नहीं बताऊँगी, पर यह बताऊँगी कि इसकी व्यवस्था क्या है. ठीक है?"

बच्चों को मालूम था कि मैडम जो भी काम देती हैं, उसके तरीके भी बताती हैं. वे आश्वस्त थे कि वे कर ही लेंगे. उन्होंने कहा - "हाँ मैडम !''

नंदा ने कहा - "हम एक ऐसी संख्या बनाएँगे, जिसमें दस-दस चीजों के चार समूह हैं और सात चीजें और भी हैं. बना लोगे?''

बच्चों के लिए शायद ये ज्यादा मुश्किल नहीं था. उन्होंने लगभग चिल्लाते हुए कहा - "हाँ मैडम.'' और फिर सारे बच्चे जुट गए इस संख्या को बनाने में. इस बीच नंदा हर बच्चे के पास जा-जाकर देखती रही कि वे क्या कर रहे हैं. जिन्हें थोड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था, उनसे एक-दो सवाल पूछकर उस जगह पर ले आती थी, जहाँ से वे अपने रास्ते स्वयं ढूँढ लें. थोड़ी देर में सभी बच्चों ने अपनी चीजों के पाँच-पाँच समूह बना लिए थे. कुछ ने खुद से किया, कुछ ने अपने साथियों से सहायता ली और कुछ लोगों को नंदा ने कुछ संकेत दिए थे. ऐसा कोई बच्चा नहीं था, जिसने यह काम नहीं किया हो. नंदा ने कहा - "बेटा ! तुम सभी लोगों ने बिल्कुल सही किया है. अब सब लोग अपने लिए जोर से तालियाँ बजा लो.''

और फिर कक्षा तालियों से गूँज गई.

नंदा ने कहा - "हमने जो संख्या बनाई है, अब उसका नाम हमें बताना है. सोचो क्या करेंगे? तुम लोग चाहो तो आपस में बातें कर सकते हो.''

अब यह कक्षा विमर्श की कक्षा में बदल गई थी. बच्चे वस्तुओं के इस समूह को एक नाम देने की कोशिश में थे. ऐसा नाम जो पहले से निश्चित था. नंदा बड़े ध्यान से बच्चों की बातचीत सुन रही थी. वह यह देखना चाह रही थी कि बच्चे संख्या नाम तक पहुँचते कैसे हैं? उसने देखा कि पहले की सीखी गई दो बातें उपयोग में आ रही थीं. दस-दस के समूहों को दस, बीस, तीस ..... के क्रम में

गिनना और संख्या को क्रम से बोलना. प्रायः सभी बच्चों ने दस-दस के चार समूह को गिनकर 'चालीस' का नाम पा लिया था. इसके आगे की सात चीजों को एक-एक नाम देकर क्रमशः गिनने में कुछ बच्चों को कठिनाई हो रही थी. नंदा ने उन्हें इस समस्या से जूझने दिया. उसे विश्वास था कि बिना उसकी मदद के भी बच्चे अपनी समस्या का हल ढूँढ लेंगे. चूँकि काम में बच्चों की आपसी सहभागिता थी. बच्चों ने एक-दूसरों की मदद से पा ही लिया कि चालीस के बाद एकतालीस से गिनती आगे बढ़ती है और फिर आगे की गिनती के नाम आने की प्रक्रिया तो स्वचालित ढंग से शुरू हो गई. अब केवल एक सावधानी की जरूरत थी कि सात के समूह की एक वस्तु के साथ एक नाम को संबंधित करना. दूसरी वस्तु के साथ क्रम में आने वाले दूसरे नाम को. और इसी तरह आगे भी. थोड़ी सी कोशिश के बाद बच्चों ने इस समस्या को जीत ही लिया.

अब कक्षा में बारी थी कि बच्चे अपनी-अपनी गिनती गिनकर बताएँ. नंदा ने कुछ बच्चों को बताने का मौका दिया. जिन बच्चों को मौके नहीं मिले, वे आतुर थे अपनी बात कहने के लिए. नंदा ने उनसे कहा - "बेटा ! कल हम और नयी संख्याओं पर काम करेंगे. तब तुम्हें भी बताने के मौके मिलेंगे.''

नंदा को आज भी संतुष्टि थी कि बच्चों ने एक पड़ाव पार कर लिया था. अब वे संख्याओं को केवल उसके नाम से ही नहीं बल्कि उसके आकार से भी पहचानने की शुरुआत कर चुके थे. उसने बच्चों से कहा - "आज तुमने दो संख्याएँ बनाईं हैं और उन्हें नाम भी दिया है. कल हम इसी काम को और आगे बढ़ाएँगे. तुम सभी कुछ नई संख्याएँ सोचकर आना.''

बच्चों ने अपनी चीजें समेटीं और उन्हें कक्षा में ही एक किनारे पर व्यवस्थित किया. कल उन्हें फिर एक बार इन चीजों के साथ काम करना था. उनके चेहरों पर भी खुशी और जीत जाने का भाव था.

(अगले दिन नंदा की रणनीति क्या थी, उसने क्या नया सिखाया, यह जानने के लिए अगला अंक देखें।)

नन्हा कौआ

लेखक - बलदाऊ राम साहू

महानदी के तट पर एक पीपल का पेड़ था. उस पेड़ पर कुछ कौए रहते थे. सुबह होते ही वे एक साथ भोजन के तलाश में निकल जाते और साँझ होने पर लौट आते.

एक दिन जब वे लौट रहे थे तब उन्होंने बगुलों का एक झुंड देखा. जिसे देखकर वे आवाक रह गए. सभी बगुले एक से बढ़कर एक सुन्दर. उस पर चमकीले पंख तो उनकी सुन्दरता को और भी व्दिगुणित कर रहे थे. बगुलों की सुन्दरता पर एक बूढ़े कौंए ने कहा - ‘‘वाह, ईश्वर ने इन्हें कितना सुन्दर बनाया है. इनके ये श्वेत पंख तो जैसे चंद्रमा को चुनौती दे रहे हैं.’’ सब कौओं ने बूढ़े कौए की हाँ में हाँ मिलायी, लेकिन एक नन्हे कौए को बूढ़े कौए की बात नहीं जँची. बड़ों के सामने कुछ कहना अच्छी बात नहीं है, यह सोचकर नन्हा कौआ चुप रहा. वैसे तो यह नन्हा कौआ सदैव अपनी प्रतिक्रिया देता था, किन्तु उसका आज मौन रहना बाकी कौओं के लिए आश्चर्य की बात थी. उसे मौन देखकर बूढ़े कौए ने कहा -''क्यों भाई आज तुम

मौन कैसे?" बूढ़े कौए की बात सुनकर नन्हे ने कहा - "बाबा, ईश्वर ने सभी जीवों को अनोखा बनाया है, भले ही कोई अपना अनोखापन देख नहीं पाया हो."

नन्हे की बात बहुतों को समझ में नहीं आयी. कुछ तो नन्हे का मुँह ताकने लगे और कुछ ने काँव-काँव कर के अपनी असहमति जताई. बूढ़े कौए ने कहा - ''अरे रुको, इसे अपनी बात कहने दो.'' बूढ़े कौए की बात सुनकर सभी मौन हो गए.

नन्हे ने कहा - "बाबा हम सभी का रंग काला है, इसका मतलब यह नहीं कि हम अनुपयोगी और बेकार हैं. ईश्वर ने हमारी रचना भी कुछ सोच-समझकर ही की होगी. हमारा रंग जरूर काला है लेकिन हम चतुर होते हैं. हमारी चतुराई का सभी लोहा मानते हैं. फिर हम जैसा परोपकारी इस सृष्टि में दूसरा और कौन है. हम अपनी अनेक क्रियाओं के माध्यम से लोगों तक शुभ संदेश भी पहुँचाते हैं. ईश्वर ने हमें यहाँ सेवा भाव देकर भेजा है. जो काम हम कर सकते हैं उसे कोई दूसरा नहीं कर सकता.

''पर हमारी आवाज?'' एक दूसरे नन्हे कौए ने कहा. इस पर वह नन्हा कौआ बोला - ''हाँ, यह सही है कि हमारी आवाज कर्कश है, पर हमारी तरह सभी प्राणियों में कुछ न कुछ कमियाँ भी अच्छाइयों के साथ ईश्वर ने ही दी हैं, ताकि किसी को अपने पर घमंड न हो, और यह हमारे वश में नहीं है. पर हम अपने व्यवहार को अच्छा बना कर अपने को और अधिक उपयोगी प्राणी बना सकते हैं. लोगों की पहचान तो उनके काम से होती है न कि उसके रूप-रंग से.'' नन्हे की बात सभी को भा गई. वे अब खुश हैं. सभी ने जोर से काँव-काँव कर के नन्हे को खूब शाबाशी दी और बूढ़े कौंए ने उसे भरपूर आशीष दिया.

सुराजी गाँव

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

नदियां के तीर नानकुन गांव रहिस. गांव के मनखे मन बड़ भोला भाला अउ सिधवा रहिस. खेती-किसानी बनी-भूती ले जिनगी के दिन बीतय. गांव म जेठू के दिन के दिन उतलइ ले गांव म सब परसान होगे रहिस. पहिली गांव म टटटा गाड़ी धरके गंवई आय महुआ लेवय अउ समान बेचय. धीर लगाके उधारी बांट बांट के सूदखोरी करत गांव म जमगे. गांव के दु चार झन मनखे ल संग म खवा पिया के अपन तीर मिला डरे रहय. गांव म चन्दा देके मेला मड़ई अउ कहि कहि परब कराए बर अड़बड़ उतावला रहय. काबर ओमा ओकर नशा के धंधा के मुनाफा रहय. मनखे ल एक दूसर ले उभरा के लडवाय. अउ उँकर कोट कछेरी बर एके हवकी म अंगठा चपकत उधारी देवय. कोट कछेरी के चक्कर म मूल ते मूल सूद ल घला नई पटा सकय. अइसने गांव के धरसा के तीर के सरी धनहा डोली ल चपक

डरिस. अउ सबर दिन के चले आवत गांव के गाड़ा-भिड़ा के रावण ल मूंद पाछु के खेत में ल औने पौने भाव म हड़पे के उदिम करय. उँकर टुरा पकलु गांव म नशा के धंधा चालू कर दिन. दु चार दिन जहुरिया टुरा म फोकट म खवा पिया के लत लगा दिन. धीर लगाके के गांव के नवा लइका मन गलत रद्दा म भटके लगिस. कोढिया लइका मन अब चोरी के उदिम घला करय. अतिक तेजी ले गांव के बिगड़त दशा ल देख गांव के सियान मन चिंतित रहिस. रघु मास्टर गांव संग बड़का सियान रहिस गांव के दु चार सियान मन सन बइठ के गांव के बिगड़त दसा बर सोचे लगिस. कुछु त उपाय सोचे ल लगही सबो आज मन म ठानिस.

गांव के जवान लइका मन ल समझाए के उदिम करिन फेर सफल नई होइस. कुंवार महीना म नवरात्रि के बेरा आइस रघु मास्टर गांव के लीला मण्डली के मुखिया रहिस. उँकर नाटक म ऐतराब म चर्च म रहय. ए दरी दशेरा बर एक दिन रघु गुरुजी आजादी के नाटक खेलिन. नाटक म विलयती व्यपारी मन कइसने भारत के किसान मजदूर के ऊपर अत्याचार ल देखइन. एक दूसर ल लड़ावत अपन राज चलावत अपने घर म अपने मन पर बरोबर किसने होगे रहेन गुरुजी ह सूत्रधार बनके बताइस. आजादी बर अमीर गरीब ऊँच नीच हिन्दू मुस्लिम सबो के जुड़ाव अउ बलिदान के बात ह सबके मन म परभाव डालिस.

गुरुजी के आधा काम बनगे रहिस गांव के पढ़े लिखे नवजवान अउ सब सियान ल सकेलिन अउ ए दारी मई लोगिन ल घला सकेलिन. गुरुजी के अड़बड़ विरोध होइस चैतू आव देखिस न ताव कहिस - गुरुजी अब हमन चूल्हा फुकबो अउ हमर डउकी मन के मुड़ी म पागा बँधाही का. गुरुजी उठ के सब ल समझइस - देखव रे भाई हो हमन जुग जोड़ी सब गाड़ी के चक्का बरोबर होथन अउ हमन बन के बनउती अन जी. हमर घर ल त इहि मन सम्भलथे त इनकर साथ ले म का हे. तमतमाये एक दु झन उठ के चल घला दिन. फेर गुरुजी कहिस कोनो डहर ले शुरुआत तो होना चाही.

धनी राम गांव के बुजुर्ग रहिस कहिस गुरुजी जेठू ले बैर करबो त कइ से चलहि. ऊँच नीच के त विही ह सहारा देथे. अउ हमन उँकर सूद के चक्कर म बइठ जान. बात ल कांटत बीचे म गुरुजी कहिस - अब ले हमन हमर गाँवे म रामकोठी बनाबो अउ उँकर ले जरूरत के समय पिसा उठाबो. ककरो मोहताज काबर रबो जी. जब तुंहर मेर सक लाही 10-20 करके जमा करदेहू महीना के महीना गांव भर के पइसा कतका होही. हमर तुमन जे बियाज बाँधहु वो तुंहर कामे आही. सब ल गुरुजी के बात बने लगिस. तुरते विही कर पांच झन के समिति बनगे अउ महिला मन खुसी खुसी नाम लिखाइन. बात सबो ल बने लगिस. थोड़ दिन बीते लगिस अब सब सूदखोरी के जंजाल ले गांव के समिति ले पइसा उठा के मुक्त होगे. उही समिति के डहर ले मांगा घला लगिस. खेत के काम ले ठेलहा बेर म इहि काम कर के पिसा कमाए. किसानी के विशेषज्ञ ल लाके जमीन के हिसाब ले अलग अलग फसल बोवाये बर निरनय लीन. एकर ले बुडती के मन बाढ़ ले बाच गे. अउ भर्री म उन्हारी मिलगे. धरसा के तीर लगे बियारा बखरी ले साग भाजी अउ परिया म मवेशी के चारा. अकाल के चपेट ले बाच गे अउ मिंजई कूटइ होगे अब फसल ल सीधा गाँव के समिति के डहर ले मिल म बेचिस, मवेशी मन के दूध ल बेचे बर तीर शहर के बड़का होटल ले बात चलिस. ए बार सब किसान ल मुनाफा ज्यादा होइस. गांव के मनखे मन के हालत अब सुधर गए रहिस. अब गुरुजी सबके विस्वास जीत डरे रहिस. सबो घर म लक्ष्मी के किरपा बरसत रहिस. अब कोनॉ बन्धुआ बनके जेठू के तीर नई रहिस. एसो वोकर खेत खार ल कोनो रेगहा कट्टू घला नई लीन परिया परगे. आधा कनिहा उँकर अइसने टूट गए रहिस. बने बेरा देख के समिति ह अब गांव म नियम बनिस जेकर घर जेठू कर ले मन्द मउहा लिही वोहा गांव ले अलग रही.

अब दु चार झन छटियाहा मन घला अपन गलती मान के हाथ म हाथ मिला डरीन. पूरा गांव के एक सुंत म बंधावत देख जेठू के तीर तखार रहइया मन घला गांव कोती मिलगे.

माई लोगन मन जुरियाके अब जेठू के घर के मोहाटी म हल्ला बोलिन. अउ नशाखोरी ल बन्द करे बर चेताइस. आधा ऐंठ ह तो पहिली ले सिरा गे रहिस पूरा गांव ल बिरोध म देख के जेठू के बचें खुचे अइठ ह निकलगे. गांव ले माफी मांगिस अउ अपन नशा के धंधा ल बन्द कर के चल दिस. गांव के लइका मन सियान मन के दब ले पहिली के पियई खवइ कमती कर दे रहिस. अउ गांव म बिक्री कम होए ले निर्मामुल सब छोड़े लगिस.

गांव म सब झन जुर मिल के विकास बर सोचे अउ नान्हे नान्हे दल बनाके साँझर मिझर काम करे. गांव म रामकोठी के आमदनी घला बाढ़ गए रहीस. उही म खेती खार बर बैंक के सहयोग गे टेक्टर लेवागे. कोनो कोनो महिला ल सिलई के काम मिलगे.

अमरैय्या के चटनी के सुवाद, नदियां के तीर बोवाये मिरचा हरदी चना गहुँ अब रामकोठी म लगे चक्की म पिसा के आजु बाजू के गाँव म बगरे लगिस. गांव के आमदानी बढ़गे. गाँव के लइका मन ल गांव में रोजगार मिलगे. गांव के सरकारी इस्कूल म बढ़िया पढ़ई बर मास्टर ,कम्प्यूटर के बेवस्था होगे. गांव के शोर सुनके नदिया म बंधानी बनगे, अस्पताल अउ जरूरी जिनिस के सुविधा. सरकार डाहर ले होगे. रघु गुरुजी अउ सियान मन चौरा म बइठ गांव के नवा रूप ल देख के खुश हावे. आज उँकर सुराजी गांव के सपना पूरा होवत रहिस.

जंगल में कृष्ण जन्माष्टमी

लेखक - दीपक कंवर

सुंदर वन मे सभी प्रकार के जीव जन्तु हंसी-खुशी रहा करते थे. वहां के राजा शेर सिंह ने कृष्णजन्माष्टमी बहुत धूमधाम से मनाने ओर उनका उत्साह बढ़ाने के लिए पुरस्कार की घोषणा की. मुनादी कराई गई की जो इस साल पहले मटका फोड़ेगा उसे पुरे साल मुफ्त मे भोजन व महल मे रहने का मौका दिया जायेगा. जन्माष्टमी के दिन कार्यक्रम खुले मैदान मे रखा गया, जहां राजा के बैठने लिए उंचा स्थान था. चारो तरफ मटका फोड़ प्रतियोगिता देखने के लिए भरी भीड़ इकटठा थी. मटके को इस बार पहले सालों की अपेक्षा ज्यादा उंचाई पर बांधा गया

था. मटका फोड़ मे हिस्सा लेने के लिए उत्साही जानवरों ने अपना-अपना नाम लल्लु सियार के पास लिखा दिया और अपनी अपनी बारी का इंतजार करने लगे.

लल्लु ने पहले नटटु बंदर का नाम पुकारा. नटटु आया और उसने उछल-उछल कर मटका तोड़ने की कई कोशिशें कीं, पर वह सफल नहीं हुआ. उसकी हरकतों से दर्शक खूब ठहाके लगाकर हंसे. दुसरी बारी कल्लू भालु की थी. कद मे छोटा और मोटा होने के कारण वह उछल भी नहीं सकता था. दोनो टांगें उठाकर उसने पूरा ज़ोर लगाया पर उसकी सभी कोशिशें बेकार हो गयीं और वह मायूस होकर लौट आया. तीसरी बारी पर जब गज्जू हाथी का नाम आया तो सभी को विश्वास हाने लगा कि इस बार ज़रूर वह मटका फोड़ देगा. पर वह भी थोड़ा सा चूक गया. चारों ओर सन्नाटा छा गया. सब सोचने लगे कि अब किसकी बारी है और कौन मटका तोड़ पायेगा. अब बारी लम्बूलाल उंट की थी. सबको यकीन हो गया था कि बस यही मटका तोड़ेगा. सभी उत्साह मे ताली बजाने लगे, लेकिन लम्बू तो मटके को बस मुंह से छू भर पाया. सभी निराश हो गये.

अबकी बार एक अजनबी का नाम पुकारा गया. इसे सुनकर सभी इधर-उधर देखने लगे. एक लम्बा काले-काले धब्बों वाला नया जानवर नज़र आया, जिसकी लम्बी-लम्बी टांगे और लंबी गर्दन थी. उसका नाम जिराफ था. राजा ने पड़ोसी राज्य से जिराफ को खासतौर पर आमंत्रित किया था. इस कार्यक्रम का आनंद लेने के लिए उसने अपना नाम सीढ़ी लिखवाया था. उसने अपनी लम्बाई का फायदा उठाते हुए एक ही बार मे मटका फोड़ दिया. चारों तरफ तालियों की गड़गड़ाहट से मैदान गूंज उठा. सभी जानवरों ने नाचते गाते कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया.

मजा आता है

लेखक - निशांत शर्मा

बड़ो के सो जाने के बाद घर में रखे फ्रीज में से चुपके-चुपके चॉकलेटस और आईस क्रीम निकालकर खाने में मजा आता है. भरी दोहपर में किचन की अलमारी में से चुपके से डिब्बे खोलकर मीक्चर, सलोनी और मिठाई निकालकर खाने में मजा आता है. नहाते समय खल-खल बहते पानी के साथ उछल कूद करने में मजा आता है. तैयार होते समय अपनी पसंद का कपड़ा और ड्रेस पहनने में मजा आता है. मम्मी के बने हाथो का पोहा, उपमा, आलू के पराठे और फ्राईड चावल खाने में मजा आता है. छुट्टियो के दिनों में टेलीविजन में कार्टून नेटवर्क, पोगो छोटा भीम, टॉम एंड जैरी, मोटू-पतलू देखने में मजा आता है.

दोपहर में खाने के समय मम्मी के हाथों का बना गरमा गरम दाल चावल उन्हीं के हाथों से मसलकर उन्हीं के हाथों से खाने में मजा आता है. शाम के गरमा गरम चाय के साथ Parle-G डूबा डूबा कर खाने में मजा आता है. चाय के बाद मोहल्लों के दोस्तों के साथ गिल्ली-डंडा, खो-खो, कबड्डी, क्रिकेट, फुटबाल, बैडमिंटन और वॉलीबॉल खेलने में मजा आता है. परंतु कभी-कभी लगता है कि यह स्मार्टफोन और मोबाईल हमसे हमारा बचपना तो नही छीन रहा, क्योंकि आज जिन लम्हो में हमें अपने दोस्तों के साथ खेलकूद करना चाहिए उन लम्हो को हम अपने स्मार्टफोन के साथ बिता कर अपना बचपना खो रहे हैं. स्मार्टफोन हमारा दूसरा परम मित्र जो बन गया है. एक बार बिना स्मार्ट फ़ोन के जिंदगी गुजार कर तो देख पगले....जिंदगी जीने का मजा आता है.

हमारा शरीर और स्वास्थ्य

लेखिका - श्वेता तिवारी

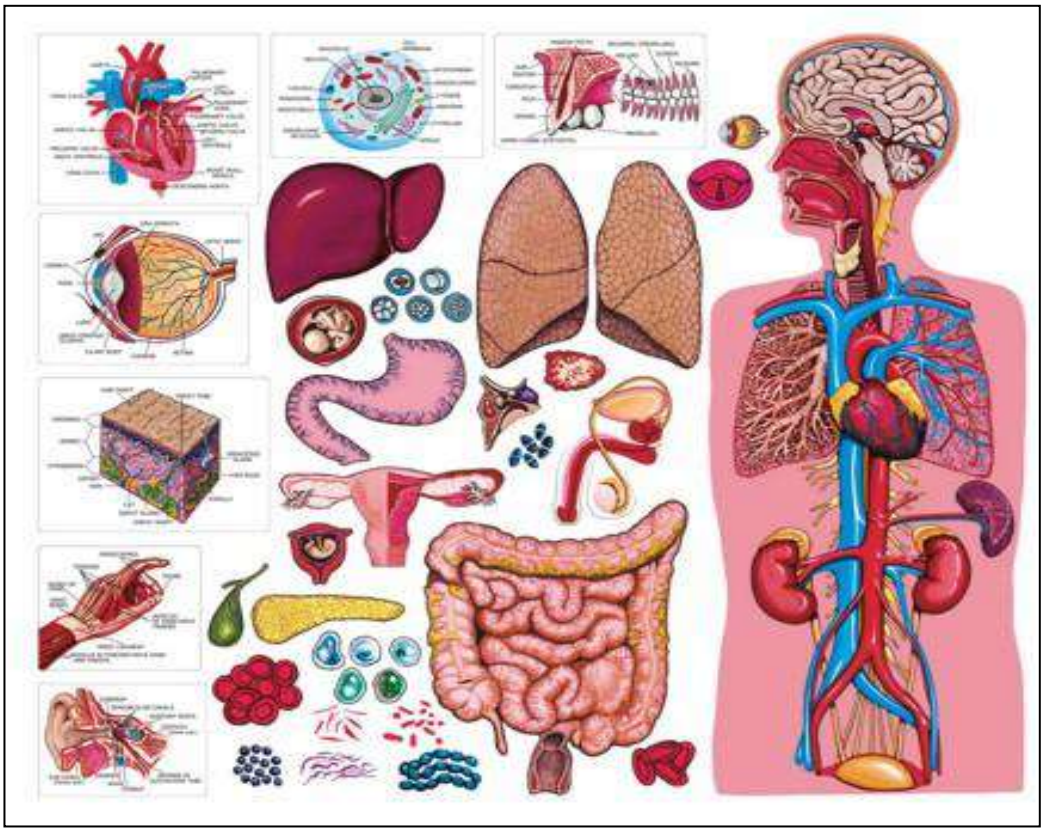

हमारा शरीर एक अद्भुत मशीन है. इसका हर एक अंग अनमोल है शरीर के हर अंग मिलजुलकर सारा काम करते हैं. मशीन में अगर कोई कल पुर्जा खराब हो जाता है तो उसे बदल कर नया पुर्जे लगा सकते हैं, परंतु हमारे शरीर का कोई अंग यदि खराब हो जाए उसे ठीक करना बहुत मुश्किल हो सकता है. हालांकि छोटे-छोटे घाव आदि कुछ सावधानी बरतने से स्वयं ठीक हो जाते हैं. हम अपने सारे काम शरीर के व्दारा ही करते हैं. इसका प्रत्येक भाग एक विशेष कार्य करता है और सारे अंग मिलकर सभी काम करते हैं. जैसे आंखों से हम हर एक वस्तु को देख सकते हैं. हाथों से सब काम करते हैं. पैरों से चलकर हम जहां चाहे जा सकते हैं. कानों से सुनते हैं तो नाक से सूंघने का काम करते हैं. मुंह से तो बोलने का काम करते

ही हैं. शरीर को चलाने के लिए भोजन भी मुंह से ही करते हैं. अगर कोई भी अंग बेकार हो जाए तो जीवन में बहुत कठिनाई आ जाती है. शरीर को स्वस्थ व सुंदर रखने के लिए उसकी देखभाल करना चाहिए. जैसे किसी मशीन को चलाने के लिए पेट्रोल या बिजली की जरूरत होती है, वैसे ही शरीर को चलाने के लिए अच्छा संतुलित भोजन, सफाई और व्यायाम करना बहुत ज़रूरी है. सादा भोजन ठीक समय पर नियमित रूप से करना चाहिए. अधिक चटपटा मिर्च मसाले वाला भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है. भोजन में दूध, दही, फल, हरी ताजा सब्जियां आदि लेना चाहिए. सुबह जल्दी उठना और व्यायाम करना चाहिए. जो रात में जल्दी सोते हैं और सुबह जल्दी उठते हैं उनकी सेहत अच्छी रहती है. अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर की सफाई बहुत जरूरी है. इसके लिए प्रतिदिन साफ पानी से नहाना चाहिए. आंख, नाक, कान आदि अंगों को साफ रखना चाहिए. बालों की भी सफाई करनी चाहिए. वस्त्र साफ-सुथरे धुले हुए होने चाहिए. गंदगी से बीमारियां होती हैं. शरीर की सफाई के साथ हमें घर और आसपास की स्वच्छता का भी ध्यान रखना चाहिए. अच्छे स्वास्थ्य के लिए जिस तरह भोजन, व्यायाम और सफाई आवश्यक है उसी तरह मनोरंजन, खेल कूद और आराम का भी महत्व है. खेलकूद से मनोरंजन होता है. इससे मन की थकान दूर होती है और शरीर भी मजबूत होता है. शरीर की मशीन के लिए आराम भी आवश्यक है. इसके लिए समय पर सोना और समय पर उठना चाहिए. सोने से शरीर की थकान दूर होती है और अगले दिन काम करने के लिए ताकत मिलती है. अगर नींद पूरी ना हो तो थकान और सुस्ती छा जाती है. काम में मन नहीं लगता है. व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है अतः हमें अपने शरीर का हर तरह से ध्यान रखना चाहिए.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

राक्षस और राजकुमारी

एक राजा की तीन बेटियां थीं. तीनों बेहद खूबसूरत थीं. सबसे बडी़ बेटी का नाम आहना उससे छोटी याना और सबसे छोटी का नाम सारा था. एक बार तीनों अपने राज्य के जंगल में घूमने निकलीं. अचानक तूफान आ गया. उनके साथ आया सुरक्षा दल इधर-उधर बिखर गया. वे तीनो जंगल में भटक गई थीं.

थोड़ी दूर चलने पर उन्हें एक महल दिखाई दिया. अंदर जाकर देखा तो वहां कोई नहीं था. उन्होंने वहां विश्राम किया और टेबल पर रखा भोजन खा लिया. सुबह होते ही सारा उस महल के बगीचे में घूमने निकल गई. सारा ने वहां गुलाब देखे और बिना कुछ सोचे उन्हें तोड़ लिया. उसके फूल तोड़ते ही उस पौधे में से एक

राक्षस बाहर आ गया, उसने सारा से कहा कि मैंने तुम्हें रहने के लिए घर और खाने के लिए भोजन दिया और तुमने मेरे ही पसंदीदा फूल तोड़ दिए. अब मैं तुम तीनों बहनों को मार डालूंगा.

सारा बहुत डर गई उसने विनती की, लेकिन राक्षस नहीं माना. फिर राक्षस ने एक शर्त रखी कि तुम्हारी बहनों को जाने दूंगा पर तुम्हें यहीं रुकना होगा.

हमे बहुत से लागों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

<u>अंजूलता भास्कर व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

सारा ने राक्षस कि शर्तें मान लीं और वह उसी महल में रहने लगी. शर्त के मुताबिक राक्षस ने सारा की बहनों को छोड़ दिया. सारा रोज सुबह उठती और अपने काम में लग जाती. रोज सुबह चाय लेकर राक्षस के पास जाती. राक्षस को सारा का यह बर्ताव अच्छा लग रहा था. एक दिन सारा ने अपनी बहनों से मिलने जाने की बात राक्षस से कही. राक्षस ने कहा ठीक है तुम जा सकती हो किन्तु 7 दिन के बाद वापस आना होगा. सारा ने कहा ठीक है और अपनी बहनों से मिलने चली गई. सारा को देखकर उनकी बहने खुश हो जाती हैं. 7 दिन कब बीत गये पता ही नहीं चला. अचानक सारा को राक्षस की बात याद आई और वह भागी-भागी उसके महल लौट आई. महल में उसने सभी तरफ देखा पर राक्षस कहीं नहीं मिला. तब सारा बगीचे में ढूंढती है. राक्षस उसी गुलाब के पास बेहोश पड़ा मिलता है. सारा रोने लगती है. उसकी आंखो से आंसू गिरने लगते हैं. आंसू की बूंदे राक्षस पर पड़ते ही वह आदमी बन गया. उसकी वेश-भूषा राजा जैसे होती है. तब सारा आश्चर्य से देखती है और पूछती है अरे ये क्या? तब वह आदमी उसे अपनी कहानी सुनाता है. उसने बताया कि मै पहले यहां का राजा था. किसी श्राप

के कारण मै राक्षस बन गया था. राजा सारा को अपनी बेटी की तरह रखता है और उनकी देखभाल करता है.

इन्द्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

सारा ने कहा ठीक है तुम मेरी बहनों को छोड़ दो. मैं यहां तुम्हारे साथ रुकने को तैयार हूं. राक्षस ने सारा की दोनों बहनों को छोड़ दिया, और फिर सारा वहीं रुक गई.

अब सारा ने राक्षस से पूछा क्या तुम मुझे मार कर खा जाओगे. तब राक्षस ने कहा हां बिल्कुल मैं तुम्हें मार कर खा जाऊंगा. यदि तुम्हें जिंदा बचना है तो तुम्हें फिर से वही पौधा लगाकर फूल खिलने तक रुकना पड़ेगा. जब वही फूल पुनः खिल जाएगा तब मैं तुम्हें वापस जाने दूंगा. सारा ने कहा ठीक है पर मैंने तो पहले ऐसा कार्य कभी नहीं किया है. तब उस राक्षस ने कहा धीरे-धीरे तुम सब सीख जाओगी.

अगली सुबह राक्षस ने सारा को उठाया और दूर पहाड़ी से वही पौधा लाने को कहा. सारा उठते ही पहाड़ी की ओर चल पड़ी और काफी देर बाद पौधा लेकर वापस लौटी. वह थक चुकी थी. राक्षस ने उसे तुरंत गड्ढा खोदकर पौधा लगाने को कहा. सारा ने डर के मारे तुरंत गड्ढा खोदा और उसमें पौधा लगाया. फिर राक्षस ने उसे पौधे पर पानी डालने को कहा. सारा एक एकदम थक चुकी थी, क्योंकि वह एक राजकुमारी थी और उसने पहले कभी ऐसा काम नहीं किया था. अगली सुबह से उसका पहला काम उस पौधे पर पानी डालना था.

वह प्रतिदिन उस पर पानी डालती और उसकी देखभाल करती. धीरे-धीरे अब यह सब उसकी आदत बनने लगी. उसे भी अपने पौधे से काफी लगाव होने लगा. आखिरकार एक दिन वह सुबह आ ही गई जब वह उस पौधे पर पानी डालने गई, तो उसने देखा कि उस पौधे पर एक बहुत ही सुंदर फूल खिला हुआ था, जो उस बगिया में सबसे सुंदर लग रहा था. वह दौड़ कर उस राक्षस के पास गई और बड़े ही उत्साह से उसे बताया कि फूल खिल गया है. मेरा फुल बगिया में सबसे सुंदर लग रहा है. राक्षस ने सारा के चेहरे के उत्साह और खुशी को देखकर सारा से पूछा कि तुम्हें कैसा लग रहा है? सारा ने कहा मेरा फूल सबसे सुंदर लग रहा है. बगिया में सबसे अच्छा लग रहा है. उसने पूरी बगिया की शोभा में चार चांद लगा रखे हैं. वह बड़े उत्साह से यह सब बता रही थी. तब राक्षस ने कहा अब यदि मैं उस फूल को तोड़ दूं तो कैसा लगेगा. एकाएक सारा के चेहरे की हंसी उड़ गई और वह क्रोधित सी होने लगी. तब राक्षस ने कहा घबराओ नहीं मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगा. फूल की शोभा बगिया में लगे उसके पौधे पर ही शोभित होती है, न कि उसे तोड़ने से.

मुझे भी उस दिन ऐसा ही लगा था. तुम पर बहुत क्रोध आया था. मैं तुम्हारी गलती का आभास कराते हुए तुम्हे सिखाना चाह रहा था. अब तुम्हारी शिक्षा पूरी हुई और तुम पुनः अपने महल जा सकती हो. ऐसा कहकर राक्षस ने सारा को खूब सारे सुंदर फूलों के पौधे देकर वहां से विदा किया. सारा ने राक्षस को धन्यवाद दिया और अपनी सीख का सदुपयोग करते हुए महल में सुंदर-सुंदर फूलों की एक बगिया बना डाली.

सीख - पुष्प की शोभा पौधे में लगे रहने से है न कि उसे पौधे से तोड़कर अलग करने से.

कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गयी कहानी

सारा वहाँ रुकने को तैयार हो गई. राक्षस ने उसकी दोनो बहनो को घर जाने दिया. उसकी दोनो बहने घर पहुँच कर पूरी बात अपने माता पिता को बताए. सभी लोग चिंतित हो गए कि अब सारा कैसे बचेगी. इधर सारा ये सोचने लगी कि किसी भी प्रकार से इस राक्षस को खुश कर दिया जाए तो शायद ये मुझे घर जाने दे सकता है. सारा दिन रात उसकी सेवा करती और राक्षस के कहे अनुसार कार्य करती वह बिल्कुल भी नही घबरा रही थी. सारा ने उसके पसन्द के फूलों का एक पूरा बगिया अपनी मेहनत व लगन से राक्षस के रहने के स्थान के आसपास उगा लिया. अब राक्षस सारा के काम व मेहनत से बहुत खुश रहने लगा और कुछ दिनों बाद उसने सारा को भी घर जाने के लिए आजाद कर दिया. उसने सारा को उसकी पसंद की बहुत सारी वस्तुएं भेंट में भी दीं. उसके बाद से राक्षस ने कभी किसी अन्य को परेशान या कैद नही किया.

सीख:- लगन सच्ची हो तो किसी को भी खुश किया जा सकता है.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

स्नो व्हाइट और सात बौने

यह बेहद पुरानी बात है, एक राज्य की रानी सर्दियों के समय खिड़की के पास बैठकर कुछ सिल रही थी. अचानक सुई उसकी उंगली में चुभ गई और रानी के रक्त का क़तरा पास की बर्फ पर जा गिरा. इस घटना को देख रानी के मन में एक ख़्याल आया कि काश मेरी एक बेटी होती, जिसका रंग इस बर्फ की तरह की

तरह ही सफेद होता, उसका होंठ रक्त के क़तरे से भी लाल होते और बाल काली घटाओं से.

कुछ समय बाद ही रानी को बेटी हुई और वो ठीक वैसी ही थी, जैसी उन्होंने कल्पना की थी, इसलिए उसका नाम रखा गया स्नो व्हाइट. कुझ समय बाद रानी की मृत्यु हो गया और समय बीतने के बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली. वो नई रानी भी बेइंतेहा ख़ूबसूरत थी. रानी के पास एक जादुई आईना था, जिससे वो वो रोज़ पूछती कि बता इस दुनिया में सबसे सुंदर कौन है? चूंकि वो आईना कभी झूठ नहीं बोलता था, तो वो हमेशा कहता- आप ही सबसे सुंदर हो रानी. यह सुन रानी ख़ुद भी इतराती.

समय बीतने के साथ-साथ स्नो व्हाइट की ख़ूबसूरती और भी निखरती गई और एक दिन ऐसा आया, जब जादुई आईने ने रानी की बजाय जवाब दिया- जग में सबसे सुंदर है- स्नो व्हाइट! यह सुन रानी को सदमा लगा और वो स्नो व्हाइट से जलने लगीं. रानी ने अपने सबसे ख़ास और क़रीबी सिपाही को बुलाकर आदेश दिया कि स्नो व्हाइट को दूर जंगल में ले जाकर मार डालो. सिपाही स्नो वहाइट को ले तो गया, पर उसे मार नहीं पाया. मासूम स्नो व्हाइट पर उसको दया आ गई और उसने स्नो व्हाइट को रानी की असलियत बताकर उससे दूर रहने को कहा. स्नो व्हाइट को जंगल में ज़िंदा ही छोड़कर जाते समय सिपाही एक जंगली जानवर का दिल ले गया सबूत के तौर पर.

स्नो व्हाइट यहां-वहां भटकती रही कि तभी उसकी नज़र एक छोटे-से घर पर पड़ी. वो घर एकदम बच्चों के घर जैसा था. वो घर था सात बौनों का.

अब इस अधूरी कहानी को जल्दी से पूरा करके हमें भेज दो. कहानी भेजने का ई-मेल है - dr.alokshukla@gmail.com. कहानी तुम वाट्सएप से 7000727568 पर भी भेज सकते हो. सभी अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं, जिन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

रानू और टीनू

लेखिका - अंजूलता भास्कर

रानू अपने दोस्त टीनू (मेढ़ेक) के साथ दोनों स्वच्छता के बारे में बात करते जंगल के रास्ते अपने अपने घर जा रहे थे रास्ते में टीनू का घर था. टीनू आपनी दोस्त रानू से कहता है यहां से मेरा घर पास में है और मेरे घर के सामने आदमी, पशु पक्षी, सभी गंदगी फैला कर चले जाते हैं. क्यों न हम यही से शुरुवात करें. रानू ने

कहा - ठीक है. तभी वहां से पानी पी कर आते हुए जंगल के राजा शेर ने उन दोनों की बातें सुन लीं. उसने रानू और टीनू से कहा - तुम लोगो ने तो गंदगी नहीं फैलाई है, तो तुम लोग साफ़ क्यों करोगे? तब रानू कहती है शेर दादा गंदगी किसी ने भी फैलाई हो, किसी न किसी को तो साफ़ करनी ही पड़ेगी. नहीं तो गंदगी के कारण बीमारियां फैलने लगेंगी. वातावरण दूषित हो जाएगा. तब जंगल के राजा शेर का मन पसीज जाता है और वह स्वच्छता में सहयोग करने की विनती करता है. दोनों शेर की बात सुनकर खुश हो जाते है. जंगल के राजा शेर ने जोर से दहाड़ लगाई. तब सभी जानवर वहां एकत्रित हो जाते हैं और सभी मिलकर आस-पास की सफाई करते हैं, और स्वच्छता बनाए रखने की शपथ लेते हैं - जीवन में स्वस्थ रहना है. प्रकृति को स्वच्छ रखना है. नारा लगाते हैं और सभी अपने अपने घर चले जाते हैं.

अनजान बहादुरी

लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर

चिंकी एक 4 साल की छोटी बच्ची जो अपने प्यारे टफी को ढूंढते- ढूंढते जंगल की ओर जा पहुंचती है. जंगल के अंदर प्रवेश करते ही वह देखती है, कि उसका प्यारा टफी एक भेड़िये के कब्जे में है. भेड़िया बहुत कुछ कुत्तों जैसा दिखता है. वह भेड़िया टफी को खाने वाला था तथी चिंकी वहां पर पहुंच गयी. चिंकी जोर से चिल्लाई - छोड़ दो मेरे प्यारे टफी को. आवाज सुनकर भेड़िया पलटा तो उसने देखा कि एक छोटी सी बच्ची वहां है. भेड़िया और भी खुश हो गया. उसने सोचा - आज मुझे कुछ ज्यादा खाना मिलेगा.

भेड़िये ने चिंकी से पूछा - तुम्हें डर नहीं लगता जो तुम यहां आ गई हो. चिंकी जोर से बोली - डर क्या होता है? तुम मेरे प्यारे टफी को छोड़ दो नहीं तो मैं तुम्हें भी अपने साथ ले जाऊंगी. यह सुनकर वह भेड़िया और भी गुस्से में आ गया और बोला - ए लड़की, क्या तू सच में मुझ से नहीं डरती? चिंकी बोली - मैं तुमसे क्यों डरूं? तुम्हारे जैसे और तुमसे भी अच्छे-अच्छे प्यारे-प्यारे कुत्ते हमारी कॉलोनी में कई घरों में हैं. हम सभी उनके साथ सुबह शाम खेलते हैं. तो फिर मैं तुमसे क्यों डरूं? भेड़िया आश्चर्य से बोला - क्या सच में! चिंकी ने कहा - हां सच में. नहीं मानते तो चलो मेरे साथ, मेरी कॉलोनी में और चल कर खुद ही देख लो.

भेड़िया चलने को तैयार हो जाता है. दोनों कॉलोनी की ओर चल पड़ते हैं. भेड़िया देखता है कि कॉलोनी के कई घरों में भेड़िये जैसे दिखने वाले ही कुछ जानवर जिन्हें आप सभी कुत्ते के रूप में जानते हैं, बंधे हुए हैं. वे कई कई प्रकार के हैं. कुछ बड़े हैं, कुछ छोटे, कुछ प्यारे दिखते हैं, तो कुछ बहुत ही खतरनाक. भेड़िया उनको देखकर डर जाता है और बोलता है - सच में यहां के लोग तो बहुत ही खतरनाक हैं. इन्होंने तो मेरे जैसे कईयों को बांध कर रखा है. मुझे जल्दी से यहां से निकलना होगा नहीं तो यह लोग मुझे भी बांध लेंगे. इतना कहकर भेड़िया वहां से नौ दो ग्यारह हो जाता है. तो देखा आप लोगों ने किस तरह एक छोटी सी 4 साल की बच्ची ने अपनी अनजान बहादुरी से भेड़िए का सामना किया.

सीख -वास्तव में बच्चों को डर के बारे में पता नहीं रहता उनमें यह भावना हम स्वयं जागृत करते हैं.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

Beautiful Butterfly

Author – Kalpana Singh

Children want to touch me

Children want to touch me

I have a soft body

I like nectar of flowers

Everybody wants to touch me

Everybody wants to touch me

I play with flowers

I have colourful wings

Somebody wants to touch me

Somebody wants to touch me

If someone tries to grab me

I will fly away

Nobody can catch me

Nobody can catch me

Let's learn !

Author - Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

Let's learn to count
Climb up to the mount

One two three
Really we are free

Four five six
Learn to mix

Seven eight nine ten
We will be great men

सामान्य ज्ञान - तंग्राम

लेखिका एवं चित्र - आशा उज्जैनी

तंग्राम एक रोचक खेल है. इसे हर जगह अपने साथ आसानी से लेकर भी जाया जा सकता है और अन्य बच्चों के साथ मिलकर खेला भी जा सकता है.

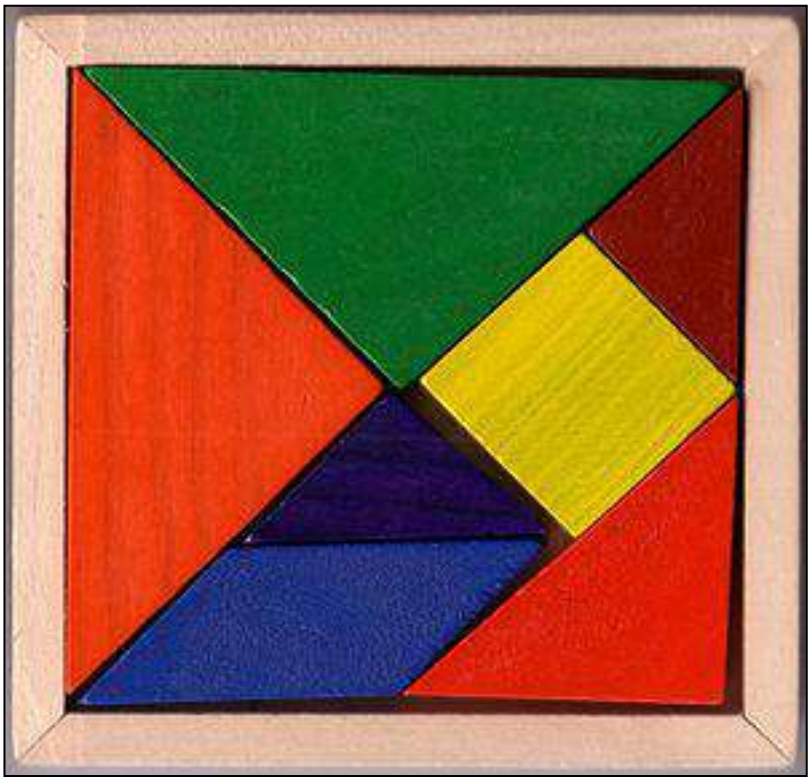

तंग्राम का आविष्कार चीन में हुआ माना जाता है. चीन में इसे - ची चिओ पेन के नाम से जाना जाता है. जिस तरह तंग्राम एक रोचक खेल है, वैसे ही इसके आविष्कार की कहानी भी रोचक है. चीन के राजा के लिए एक बार उसके सेवक एक स्कवॉयर शीशा लेकर आ रहे थे. गलती से वह शीशा गिरकर टूट गया, मजे की बात यह थी कि शीशा गिरकर चकनाचूर नहीं हुआ बल्कि स्पष्ट सात टुकड़ों में बंट गया. सेवकों ने शीशे के उन सात टुकड़ों को वापस चौकोर आकार में जोड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किया. सेवक जितनी बार टुकड़ों को जोड़ने के लिए समायोजित

करते हर बार उन्हें एक नई आकृति मिलती. सेवकों को इस खेल में बड़ा मजा आया और उन्होंने राजा को शीशे के ये सात टुकड़े पज़ल के रूप में पेश किए. राजा ने भी इस खेल को बहुत पसंद किया. धीरे-धीरे यह खेल पूरे चीन में खेला जाने लगा. 18वीं शताब्दी के मध्य में चीन के किसी व्यक्ति ने तंग्राम को जहाज के जरिए अमेरिका में रह रहे किसी बच्चे को गिफ्ट में भेजा था. 19वीं शताब्दी तक यह अमेरिका से यूरोप में और फिर दुनिया भर में जाना जाने लगा.

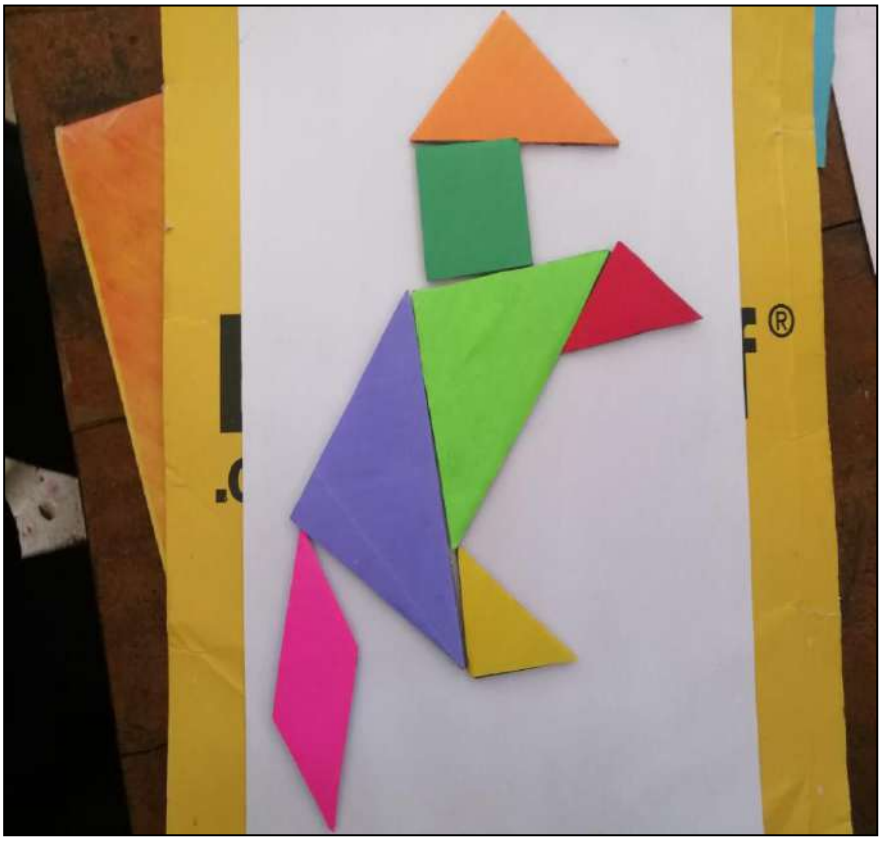

तंग्राम को बाजार से खरीदकर लाया जा सकता है या इसे किसी स्कवॉयर गत्ते या कार्डबोर्ड से घर पर भी बनाया जा सकता है. इसकी सात ज्यामितीय आकृतियों में पांच त्रिकोण, एक वर्ग और एक सामानांतर चतुर्भुज होता है. इसके दो बड़े त्रिकोणों का आकार मध्यम आकार के त्रिकोण से दोगुना तथा मध्यम आकार के त्रिकोण का आकार छोटे आकार के त्रिकोण से दोगुना होता है. इसी तरह स्कवॉयर टुकड़े का क्षेत्रफल छोटे आकार के त्रिकोण के क्षेत्रफल से दोगुना और समानांतर चतुर्भुज का क्षेत्रफल स्कवॉयर टुकड़े के बराबर रखा जाएगा.

बाल कामिक्स

काफी दिनों बाद हमें एक बार फिर से डोंगरदहा से अशोक राठिया जी ने बाल कामिक्स भेजी हैं जिन्हें हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

बाल कॉमिक्स चित्र कथा
नाम प्रशांत कुमार यादव
कक्षा 5 वी
जिला - कोरबा
(छत्तीसगढ़)
माह. अगस्त
बेटा तुम कहाँ जा रहे हो।
पापा मैं मेरे दोस्त के घर जा रहा हूँ।
जल्दी आना बेटा
ठीक है पापा

बाल कॉमिक्स चित्र कथा
नाम - मंजुधा कंवर कुमकुम कुमारी
यादव अंकिता कुमारी
कक्षा - पाँचवी
स्कूल - प्रा॰ शा॰ डोंगदरहा
जिला - कोरबा
छत्तीसगढ़
एक बंदर है और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जा रहा है।
Name - Mansudha Kanwar
एक तितली फूल का रस चूसने आ रही है।

बाल कॉमिक्स चित्र कथा
नाम कृष्णा कुमार उमाकांत यादव
दिपांजली मंझवार इशिका यादव
कक्षा पाँचवी
स्कूल प्रा शा
जिला - कोरबा
छत्तीसगढ़ माह. अगस्त
(2)
हमारे घर में लकड़ी नहीं है इस लिए पेड़ काट रहा हूं।
(1)
पेड़ को क्यों काट रहे हो

<u>अजादी</u>

लेखक - नेमीचंद साहू

झंडा हमर तिरंगा आय

तीन रंग ले बने हवय ।

एखर मान सममान बर

कतको जतन करे हवय ||

कतेक बछर ले परके

करेन हमन गुलामी ग |

अइसन अवसर आय हे

करबो एखर सलामी ग ||

नइ राहय काकरो मन म

इरसा दवेष भावना ह |

मिलजुर के मनाबो परब

आगे आजादी पावना ह ||

पुरखा मन कतेक लडिस

दुख ल अडबड सहिके |

बात ओखर रखबो सुरता

सुख-दुख म घलो रहिके ||

देस ल आज सजाबो सुघ्घर

ओनहा नवा पहिनाबो |

जय बोलाबो भुइंया के

हिन्दुस्तानी कहलाबो ||

अब्बड़ मज़ा आवय

लेखक - शशिभूषण स्नेही

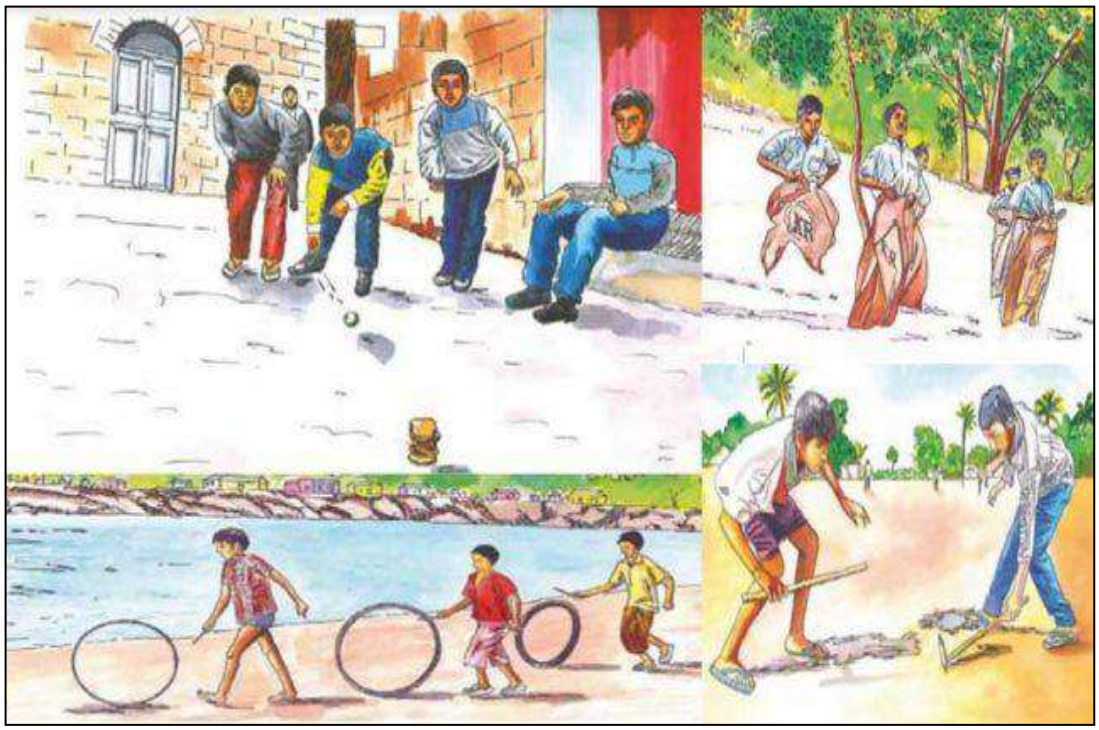

कहूँ खोजत हे त लुकाय म
जाड़ के बेरा पानी छिटकाय म
अउ रद्दा के पूछइया ल
आने रद्दा म भटकाय म
अब्बड़ मज़ा आवय

काकरो चोरा के बीही खाये म
काकरो फइरका बजाय म
अउ डोकरा-डोकरी मन ल
कोंचक-कोंचक के तमकाय म
अब्बड़ मज़ा आवय

आमा ल कोइहाय म
होरी के रंग सनाय म
अउ बबा के संगे-संग
हाट-बजार जाय म
अब्बड़ मज़ा आवय

घेरी-बेरी नहाय म
बेंदरा ल कुदाय म
अउ रथिया लुकाके
लइका मन ल डरवाय म
अब्बड़ मज़ा आवय

इस पृथ्वी को चलो बचाएं

लेखिका एवं चित्र - आशा उज्जैनी

यह पृथ्वी हम जिस पर रहते

इस धरती को चलो बचाएं

हमने बस लेना ही सीखा

अन्न, फूल, फल ले लेते हैं

यह पृथ्वी इतना देती है

बदले में हम क्या देते हैं

आज स्वयं से पूछें आओ

जो सच है सबको समझाएं

यह धरती हम जिस पर रहते

इस धरती को चलो बचाएं

हमने किया है इसे विषैला

बारिश तक अब है तेजाबी

खतरनाक केमिकल डालते

कचरा डाल रहे हम इसमें

पर्यावरण प्रदूषित अपना

जल थल सब को स्वच्छ बनाएं

यह धरती हम जिस पर रहते

इस धरती को चलो बचाएं

माना अब विज्ञान ज्ञान में

बहुत बढ़ चुके हैं हम आगे

धरती नहीं बची तब हम सब

ढूढेंगे सांसों के धागे

नहीं प्रकृति से छेड़छाड़ हो

धरती मां है भूल न जाएं

यह धरती हम जिस पर रहते

इस पृथ्वी को चलो बचाएं

छोटे छोटे हाथ जोड़कर (ताटंक छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

छोटे छोटे हाथ जोड़कर, प्रभु को शीश झुकाता हूँ ।
पूजा पाठ न जानू भगवन, लड्डू भोग चढ़ाता हूँ ।।

ज्ञान बुद्धि के दाता हो तुम, संकट सब हर लेते हो ।
ध्यान मग्न हो जो भी माँगे, उसको तुम वर देते हो ।।

सूपा जैसे कान तुम्हारे, लड्डू मोदक खाते हो ।
भक्तों पर जब संकट आये, मूषक चढ़कर आते हो ।।

पहिली पूजा करते हैं सब, बच्चों के तुम प्यारे हो ।
नहीं कभी भी गुस्सा करते, सब भगवन से न्यारे हो ।।

छोटे छोटे बालक हैं हम, शरण आपके आते हैं ।
दूर करो सब संकट प्रभु जी, भजन आपके गाते हैं ।।

जय गणेश देवा

लेखक - प्रिया देवांगन "प्रियू"

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
रोज करो पूजा पाठ, और करो सेवा

लड्डू मोदक तुमको भाये, फूल पान मिलके चढ़ाये
धूप आरती रोज लगाये, चरणों मे हम शीश नवाये

मूसक के तुम हो सवारी, एक दन्त के तुम हो धारी
लंबोदर महाराज कहलाते, पेट तुम्हारा है सबसे भारी

अन्धे को तुम आँख देते, कोढ़िन को तुम देते काया
सबके भव बाधा को हरते, बढाते हो सबकी माया

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
रोज करो पूजा पाठ, और करो सेवा

<u>जिनगी हे अनमोल</u>

लेखक - बलराम नेताम

जिनगी हे अनमोल संगी

जिनगी हे अनमोल

मन के बात बोल दे,

पिरा के गठरी खोल दे,

सोच सोच के ,काबर डरत हस,

अइसन तन मा का पिरा होगे,

जहर ला तै पियत हस।

किस्मत वाला मन ला मिलथे तन,

बात तै मोरो मान ले,

जिनगी एक बार मिलथे,

गाँठ तै बांध ले।

अब तो दुख के गठरी खोल,

मन के बात ला बोल,

जिनगी हे अनमोल संगी

जिनगी हे अनमोल संगी।

परीक्षा में होथे पास अव फेल,

जिनगी नो होय कोनो खेल,

दारू, माखुर के नशा न कर,

जिनगी हे अनमोल मजा कर।

तीज तिहार के भादों (लावणी छन्द)

लेखक - कमलेश कुमार वर्मा

सावन पाछू आथे संगी,भादो हा पावन-सुग्घर

चारों मूड़ा खेत-खार मन,दिखथें जी हरियर-हरियर

परब खमरषठ मा महतारी,रखथें व्रत लइका मन बर

छै जिनीस के भाजी सब्जी, अउ खाथें चाउँर पसहर

कृष्ण पाख के आठे मा जी,जनम धरिन जग मा गिरधर

येकर पावन गीता-बानी,मानवता बर हे हितकर

बेटी-माई मन तीजा मा, रहि उपास निर्जल दिनभर

शिव-गौरी ला पूज मांगथे,बड़ लम्बा पति बर उम्मर

शुक्ल पाख के चौथा तिथि मा, विराजथे जी गणपति हर

बड़ उछाह ले पूजा करथैं,भक्तन मन दस दिन घर-घर

<u>ननपन के सुरता</u>

लेखक - श्रवण कुमार साहू 'प्रखर'

माटी के घरघुन्धिया बनावन,

परसा पान के दोना।

माटी के चूल्हा बनावन,

अउ माटी के खेल-खिलोना।।

ओरिछा म नहावन,

अउ चिखला -पानी म खेलन।

बिना दवा पानी के हमन,

कतको बीमारी ल झेलन।।

सुरता आथे रे मोला,

ननपन के गांव गोहार के----------

बर पाना के तुतरू बनावन,

कागज के फ़िल्फिलि।

सन्डेवा के मोहरी बनाके,

बन जावन शेख चिल्ली।।

धुर्रा-माटी लागे संगी,

हमला मथुरा ,काशी,

छप्पन भोग जईसन लागे,

बटकी के चटनी- बासी।

सुरता आथे रे ,

अम्मट म भाजी बोहार के----------

थोर -थोर म हँसना गाना,

बाते- बात म रोना।

कतेक सुग्घर लागे,

घर कुरिया म लुक लुकौना।।

पथरा के गड़गड़ी बनावन,

थारी ल बनावन बाजा।

पिट्ठुल-पासा, अट्ठा -चंगा,

चोर, पुलिस अउ राजा।।

बड़ मेंछराना राम लीला म,

धर बेंदरा सिंगार के----

कभू खेलन हम खो कबड्डी,

कभू खेलन हम लंगड़ी।

कभू खेलन हम गुल्ली-डण्डा,

कभू खेलन ग फुगड़ी।।

तरिया,नरवा म डुबकना,

अउ खावन अमली के लाटा।

कभू नई भुलावन संगी,

हमन भैरा गुरुजी के चांटा।।

मुंगेसर खावन भर्री के,

अउ बुचरवा कांदा सरार के---

पाँच पैसा म काम चल जाय,

नई लागय एको रुपिया।

सब्बो बर एक्के भाव रहे,

का दीदी अउ का भैय्या।।

बबा कर कहानी सुनन,

अउ डोकरी दाई के दुलार।

अब कहाँ ले पाबोन सङ्गवारी,

वो सुग्घर घर संसार।।

तईहा के बात ल बईहा लेग गे,

अपन झोला म डार के-------

नन्हीं कली

लेखक - संतोष कुमार साहू "प्रकृति"

नन्हीं कली मैं नन्हीं कली,

ज्ञान गली में मैं तो खिली।।

१

गुलाब जूही नाम मेरे,

बाग बगीचा धाम मेरे।

महक उडाना काम मेरे,

लोगों की प्यार जान मेरी।।

प्रेम डगर को मैं तो चली,

नन्हीं कली मैं नन्हीं कली।।

ज्ञान गली में मैं तो खिली।।

२

बच्चों में प्यार बहाती हूँ,

मोंगरा गेंदा कहलाती हूँ।

सेवती चमेली महक मेरी,

सुरजमुखी बन जाती हूँ।।

किचड में खिलकर कमल चली।।

नन्हीं कली मैं नन्हीं कली।

ज्ञान गली में मैं तो खिली।।

३

रात की रानी बेला खिली, रजनीगंधा की महक उडी।

चंपा आंगन में आकर जुडी,

पारिजात पहचान मेरी।।

गांव गली में महक चली।।

नन्हीं कली मैं नन्हीं कली,

ज्ञान गली में मैं तो खिली।।

पानी हे जिनगानी

लेखक - दीपक कंवर

बादर गरजे, बिज़ली चमके,
बरसे भूईया मा पानी,
कूदत नरवा गाना गावे,
पानी हे जिनगानी, रे संगी पानी हे जिनगानी

खेत खार बारी हरियागे
फरे फूले आनी बानी
चिरई चहकत गाना गावे
पानी हे जिनगानी, रे संगी पानी हे जिनगानी

तरिया डबरा कुंआ अघागे,
चूहे खपरा के छानी,
बेंगची रानी गाना गावे,
पानी हे जिनगानी, रे संगी पानी हे जिनगानी

नागर के संग बईला फंदागे,
खेती गांव के कहानी,
लईका संग महतारी गावे,
पानी हे जिनगानी, रे संगी पानी हे जिनगानी

पितर के दिन आ गे

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

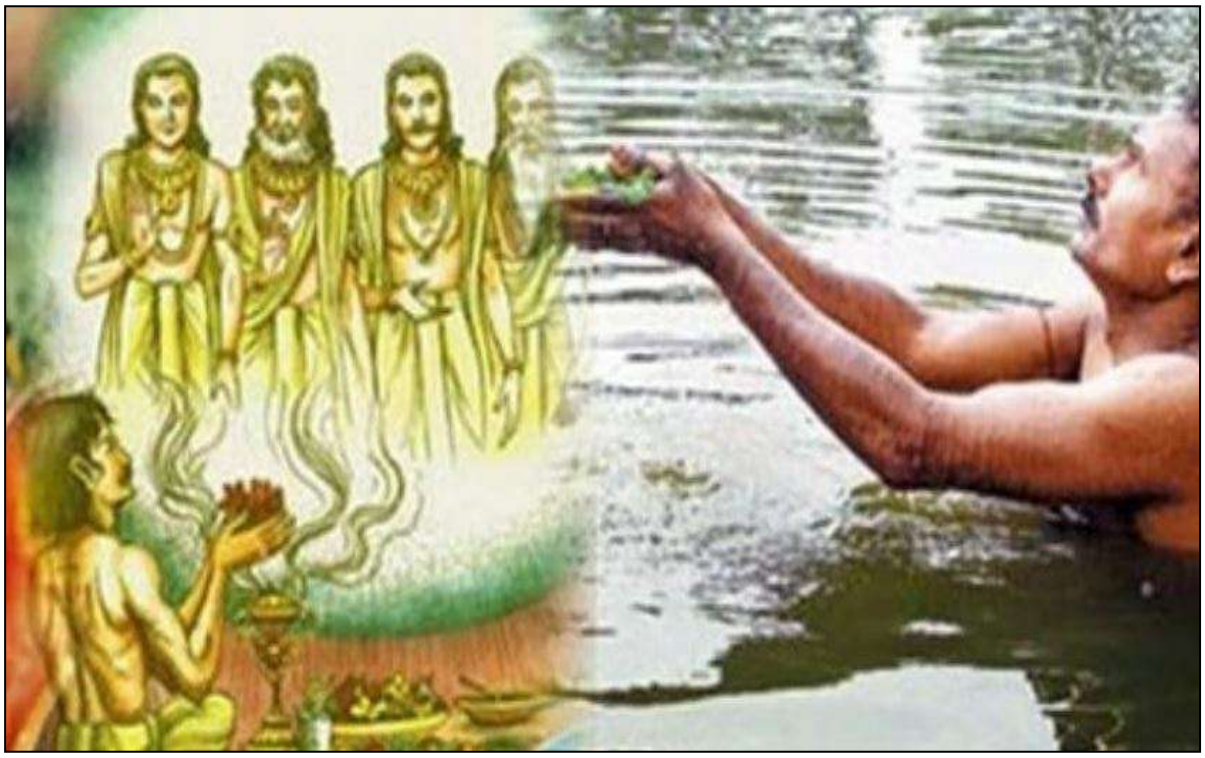

पितर के दिन आगे संगी, बरा सोहारी बनावत हे।
बिहनिया ले उठ के दाई, हुम जग ला मढ़हावत हे।।
बबा ह आही कहिके, सबो झन ल बतावत हे।
दुवारी ला लीप बहार के, लोटा ला मढ़हावत हे।।

छानही मा कौआ बइठे, काँव काँव नरियावत हे।
डोकरी दाई देख देख के, बबा ला सोरियावत हे।।
बड़ सुरता आवत हावय, नाती ल बतावत हे।
बरा सोहारी राँध राँध के, पितर ला मनावत हे।।

साल भर मे एक दिन, सबके सुरता आवत हे।
हुम जग ला दे के संगी, मन ला मढावत हे।।
फोटू ला मढ़हा के ओकर, बरा ला खवावत हे।
एक लोटा पानी देके, पुरखा ला मनावत हे ।।

बड़ महत्व हे

लेखक - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

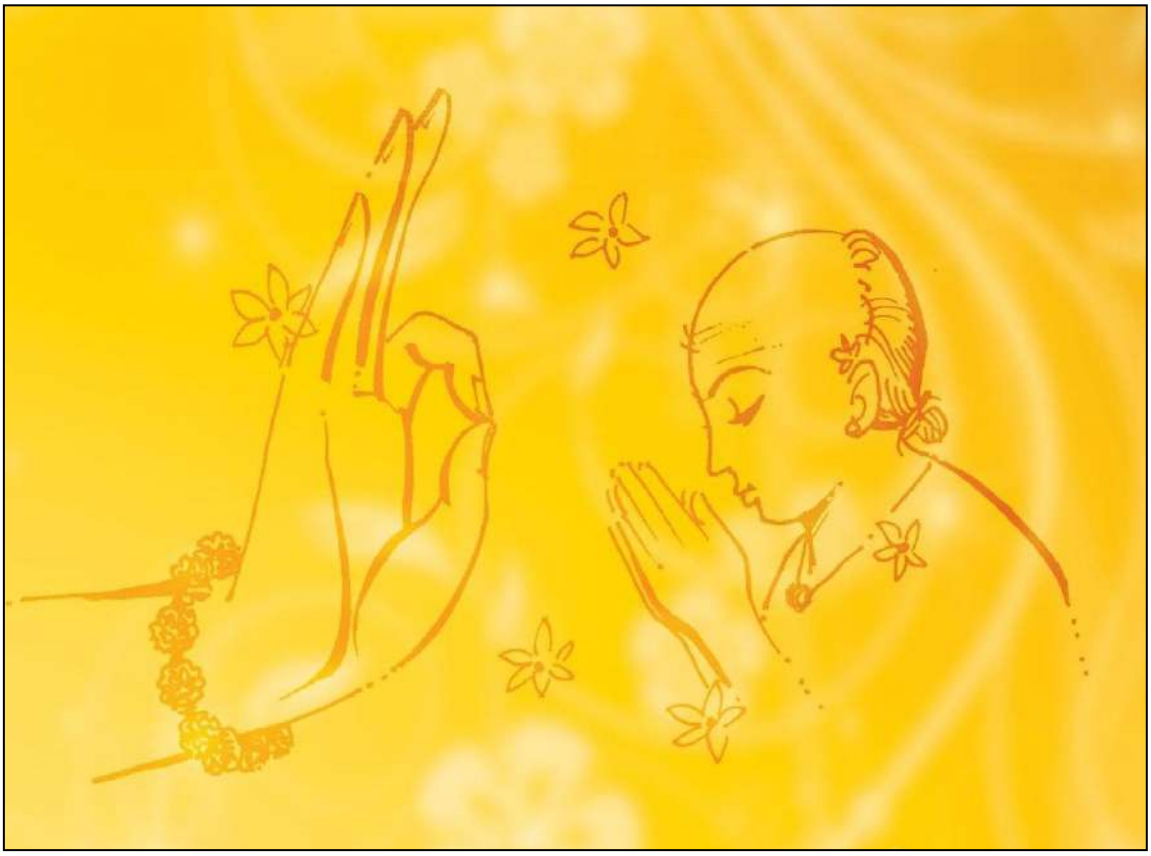

तिहार म तीजा के

करेला म बीजा के

नता म जीजा के

बड़ महत्व हे

सब्जी म तुमा के

देवी म उमा के

जिनगी म क्षमा के

बड़ महत्व हे

रोटी म सोंहारी के

घर म सुवारी के

पार्वती बर त्रिपुरारी के

बड़ महत्व हे

बेनी म फुंदरा के

तीजा म लुगरा के

बाड़ी म कुंदरा के

बड़ महत्व हे

फूल म चमेली के

प्रश्न म पहेली के

मैके म सहेली के

बड़ महत्व है

बाबू के पियार के

दाई के दुलार के

गुरूजी के मार के

बड़ महत्व हे

मया म इकरार के

उपास म फरहार के

दिन म इतवार के

बड़ महत्व हे

गणित म योग के

मिले म संयोग के

मयारू संग वियोग के

बड़ महत्व हे

तैहा के गोठ के

बोले म होंठ के

हिरदे म चोट के

बड़ महत्व हे

जिनगी म काम के

काम म आराम के

नाम म श्रीराम के

बड़ महत्व हे

बाल गणेश

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

मूसक ऊपर चढ़ कर आये, बाल गणेश हमारे द्वार ।
हाथ जोड़ कर भक्त खड़े हैं, विनय करें सब बारंबार ।।

फूल पान सब अर्पण करते, दीप जलाये घर पर आज।
हम क्या जानें पूजा भगवन, आप बचाओ हमरे लाज।।

लड्डू मोदक बहुत सुहाये, सभी लगाये तुमको भोग ।
पूजे जो भी सच्चे दिल से, मिट जाये जी सारे रोग।।

बच्चे बूढे खुश हो जाये, मोदक खाये बाल गणेश ।
आशीर्वाद सभी को देते, काटे पल भर में सब क्लेश।।

करें आरती दीप जलायें, माँगें सब तुमसे वरदान ।
ज्ञान बुद्धि दो हमको दाता, मिट जाये सारे अज्ञान।।

ज्ञान की दीपक जलाने आये, श्री गणपति हमारे घर।
शिव गौरी के साथ मे आये, लंबोदर जी हमारे घर।।

एक बार तीज

लेखक - जी.आर. टंडन

साल में एक बार आता है तीज

बेटी, बहनों की मायके आने की रीत

सहेलियों से बनी रहे मीत

किलकारी से आंगन में गूंजे संगीत

नारी का सम्मान कर

अब न तिरस्कार कर

विशुध्द मन अंतस

तू भूल अहं अतीत

रंग भेद, जाति छोड़

ये जन्म है अनमोल

कविराज टंडन

तीजा की बधाई

आपका अभिनंदन

भाग्य कोसते न रहो

लगा गले से पिरीत

बेटी के महिमा

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

बेटी होथे राज दुलारी, लक्ष्मी जइसे येला मान ।
यहू हरे घर के दीपक जी, बढ़हाथे गा घर के शान।।

सबले पहिली बिहना उठथे, घर के करथे बूता काम ।
कभू नहीं आराम करे जी, नइ माँगे वो काँही दाम ।।

काम धाम मा हाथ बँटाथे , दाई ला देवय वो साथ ।
सबके सेवा करधे बेटी, रहय नही गा रीता हाथ ।।

करे शिकायत कभू नहीं वो , खावय सबझन मिलके बाँट ।
भात साग ला बढ़िया राँधय , खुश होके सब खावय चाँट ।।

कम झन आँकव बेटी संगी, उड़ा लेत अब जेट विमान ।
सैनिक बन के रक्षा करथे, हमर देश के येहर शान ।।

सिधवा बर जी सिधवा हावय, बैरी बर बन जाथे काल ।
मुड़ी काट के हाथ म देवय , नइ चलन देय ओकर चाल ।।

थरथर काँपय बैरी मन हा , लेथे जब चंडी अवतार ।
जान बचा के बैरी भागे , छोड़ अपन सब्बो हथियार ।।

बेशरम की आत्मगाथा

लेखक - दिलकेश मधुकर

बेशरम हूं मैं, पर मुझमें शरम है।
कठोर कभी तो, कभी नरम है।

कभी बच्चों की तीर-धनुष बना,
ईट-पत्थर ना हो तो दीवार बना।

बनकर सूखी मैं चूल्हा जलाया।
तब लोगों को भोजन मिल पाया।

छत पर लगा तो छाया दिया।
जहां फेंका तो वही जी लिया।

<u>ममा के गाँव !!</u>

लेखक - शशिभूषण स्नेही

आवय मज़ा ममा के गाँव म जी
आवय मज़ा ममा के गाँव म
सन्झा-बिहनिया खेलन-कूदन
अउ मंझनिया अमरईया के छाँव म
आवय मज़ा ममा के गाँव म

ममादाई चीला रोटी बनावय
अब्बड़ मया म मोला खवावय
कुन्हुन पानी म हाथ-गोड़ ल धोवाके
रथिया तेल चुपरावय मोर पाँव म
आवय मज़ा ममा के गाँव म

बज़ार ल ममाददा खाई खजाना लावय
खाँध म बईठा के गली-खोर बुलावय
ममा-मामी मन मेर मैं हर रिसावव
घोड़न जावव रहय धुर्रा-माटी जेन ठांव म
आवय मज़ा ममा के गाँव म

माटी

लेखिका - अनिता रावटे

जे करा देखबे ते करा माटी
करिया लाल पीला माटी

माटी म हम हल चलाथन
माटी म हम अन्न उगाथन

माटी म हम खेलथन-कूदथन
माटी के हम खिलौना बनाथन

माटी ह करय महर-महर
अन्न लहरावय लहर-लहर

माटी ले हम बरतन बनाथन
जेमा जी हम खाथन-पीथन

मित्र

लेखक - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

मित्र भले ही एक हो

लेकिन नेक हो

मित्र भले ही एक हो

पर उनके पास विवेक हो

मित्र भले ही एक हो

पर उनमें गुण अनेक हों

मित्र कर्ण सा हो

जो वक़्त पड़ने पर जान दे दे

मित्र कृष्ण सा हो

समय आने पर सम्मान दे दे

मित्रता में लेने नहीं

देने का भाव हो

मित्र वही चुनो, जिनका

अभाव में भी प्रभाव हो

मित्रता तो वही अखण्ड रहती है

जिसमें एक दूजे के लिए

प्रेम, त्याग, समर्पण का भाव हो

मेरी मां

लेखिका - कांति नागे

मेरी सुबह की पूजा, मेरी आरती, मेरी माँ

मेरी गुरु, मेरा पथ आलोकित करती माँ

मेरे मन की, हर व्यथा समझती मेरी माँ

चांद सी शीतलता, संतान की नीरवता

भविष्य गढ़ने का अहसास, चेहरे की कांति

तेरी आहट ही है मां, जो मकान को घर बनाती है

एक पल को भी तू न हो तो, घर की दीवारें भी चिल्लाती

बच्चों के मन का दर्पण माँ

वक्त आने पर पिता भी बन जाती माँ

सब तकलीफें भुलाकर, जिम्मेदारी निभाती माँ

मेरी अरदास, मेरा कीर्तन, मेरा अमृत, मेरा मोती, मेरी माँ

प्यार में नदियों सी चंचलता

हृदय में सागर सी गहराई

गलती होने पर सख्त चट्टान बन जाती है

हृदय पर पत्थर रखकर अपनी परछाई

किसी गैर को सौंपती है मेंरी माँ

मेरे गीत, मेरी कविता, मेरा भजन, मेरी माँ

रहूं कहीं भी, अहसास तेरा हर क्षण हो मेरी माँ

अनुबुझ पहेली का हल है माँ

हर दर्द का मरहम है माँ

मेरी धरती, मेरी आसमां

मेरी जन्नत, मेरी मन्नत है माँ

लहू का हर कतरा

तेरा तलबगार है माँ

मन मंदिर की मूर्ति, धरती पर सृष्टि का प्रतीक है माँ

संयम और धैर्य की अनोखी मिसाल है माँ

मेरे जीवन का प्रकाश, सूरज की पहली किरण, फूलों की महक है माँ

मेरी कलम, मेरा ज्ञान, मेरा विज्ञान है माँ

तुझमे मेरा प्यार बसा, तू ही मेरा संसार है माँ

मेरी पूजा, मेरी इबादत मेरे जीवन नैया की नाविक मेरी माँ

मेरे मोजे-जूते

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

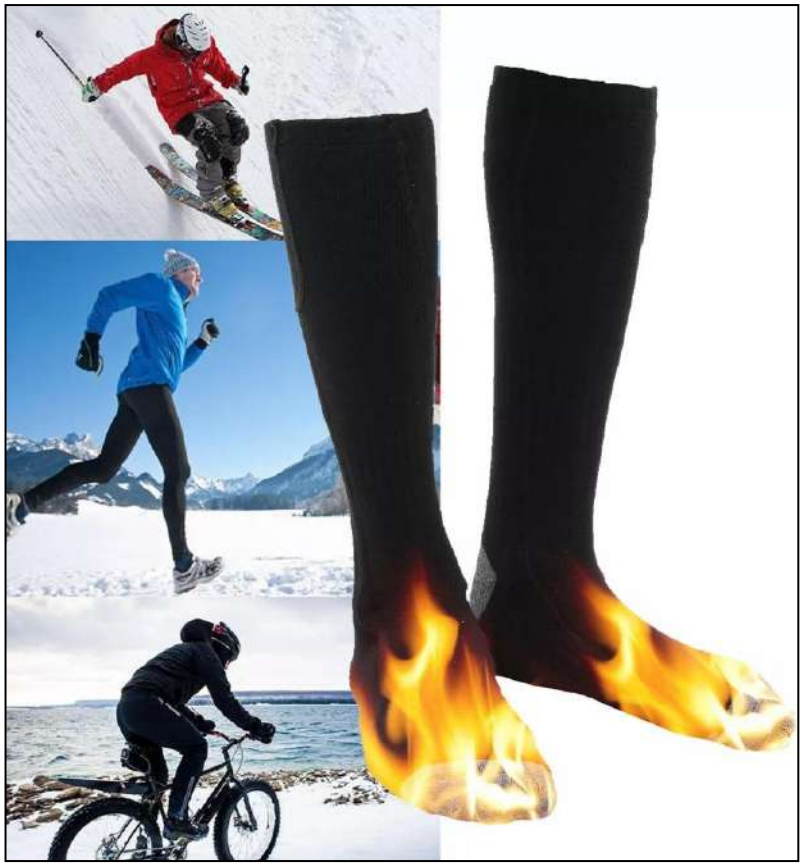

मेरे प्यारे मोजे-जूते
मेरे न्यारे मोजे-जूते

काले और निराले जूते
बढ़िया ढीले-ढाले जूते

मेरे मोजे नरम रंगीले
लाल सादे नीले पीले

सभी रहते साथ-साथ
सुबह शाम दिन-रात

मेरे पैर सुरक्षित रखते
मेरे लिए कष्ट सहते

मित्रवत हम में नाता
जग को संदेश जाता

ये देश है वीर जवानों का

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

घर का आँगन माँ के आँचल,
गली गाँव को सुने कर हम,
बचपन के ओ दोस्त निराले,
छोड़ आया ओ ताल तलैया,
देश भक्ति की जज्बा ओढ़े,
ये देश है वीर जवानो का ||

मेरा प्यारा भारत न्यारा,
कोई इनको न आँखे दिखा,
उनके आँखे नोच लेंगे हम,
वीरो के फौलादी बाँहो में,
चट्टानो को तोड़ देंगे हम,
ये देश है वीर जवानों का ||

तन मन सबको वारु मैं,
चाहे दिन रात कभी हो,
हम सपूत माँ भारती के,
निज सुख भी त्यागु मैं,
तेरे भाल सजाओं मैं माँ,
ये देश है वीर जवानों का ||

देश भक्ति का चोला ओढ़े,
वीर शिवा राणा स जोश लिए,
शान बना माँ चरणों का,
जनमानस की रक्षा हित,
कसमे खाता चरणों का मैं,
ये देश है वीर जवानों का ||

गिद्ध की आँखे गड़ा मै,
चौकस खड़ा द्वारों पर,
न पैर पसारे दुश्मन ओ,
याद दिलाती हर क्षण वे,
भारत माता तेरे सम्मानों की,
ये देश है वीर जवानों का ||

न आँच न आने देंगे हम,
भारत माता के चरणों को,
चाहे सर्दी हो या वर्षा,
तपते गर्मी चट्टानों में,
हिम धरा हिमालय में भी,
पहरा देते प्यारे जवान,

ये देश है वीर जवानों का ||

सीमाओं में अडिग खड़ा,
चट्टान बनकर ढाल बना,
तोपो की सलामी देकर,
दुश्मन से भी खूब लड़े हम,
माँ तिरंगे की रक्षा हित में,
ये देश वीर जवानों का ||

हुँकार भरा ललकारता हु,
दुश्मन के ओ टोली को मै,
ऊची चोंटी हिमालय से,
खदेड़ भगाऊँ दुश्मन को भी,
चाहे लड़ते शहीद हो जाऊं,
ये देश है वीर जावानों का ||

कफन तिरंगे ओढ़ लिए मैं,
गाँव गली ओ मेरे आँगन,
फिर वापस मैं भी आऊँ,
ओ दोस्त मेरे बचपन का,
लिपट गले मैं भी लगाऊँ,
ये देश है वीर जवानों का ||

वो चल देहे तीजा

लेखिका - शीला गुरूगोस्वामी

वो चल देहे तीजा लइका मन ल धर के

मोर माथे होगे जिम्मेदारी पूरा घर के

काम बूता किसनो करके अलवा जलवा करत हंव

झाड़ू पोछा मांजना धोना पानी घलो भरत हंव

साग पान के का कहिबे कभू सिट्ठा त कभू खारो

मजा देखे बर फोन म वो लेवत रहिथे आरो

हाँसो चाहे गारी देवव अपन हाल बतात हंव

एक्के घांव रानंध के तीन बेर ले खात हंव

मइके जाके मजा करत हे, मिलके भाई भतीजा

ये तीजा चक्कर म रोज निकलत हे हमर नतीजा

एकक दिन बच्छर कस बीते लागय सुन्ना सुन्ना

घर दुवार ये कुरिया कोठा दिखय निचट जुन्ना

जेकर बेंदरा ओकरे ले नाचथे सच हावे ये हाना

नारी बिना घर संसार के नइ हे कुछू ठिकाना

सीख लूं

लेखक - योगेश ध्रुव"भीम"

सीख सदा मैं सभी से लूं,
सदमार्ग मन गतिमान हो,
हमेशा निज ध्यान भी रहे,
पथ भ्रष्ट भी कभी न हो ||

सीख अनिल गति से लूं,
मन की तरंग न विरल हो,
उमंग सदा मन में बनी रहे,
न डिगे चंचल मन कभी ||

सीख मैं नीर प्रवाह से लूं,
आगे पथ निरन्तर ही बढ़े,
न थके रुके मन भी कभी,
निर्मल हों मेरे विचार में ||

सीख मैं पावक गति से लूं,
तेज मन उज्ववलता भी दे,
जलु और प्रकाश तेज हो,
मन भी तो मेरे कुंदन बने ||

सीख खग के समान लूं,
नील गगन के उड़ान में,
न डरुं न ही मैं थकूं कभी,
जीवन के भी ये सार हो ||

सीख भानु के प्रकाश से लूं,
उष्णता लिये तेज हो किरण,
मन मे छुपी बुराई इसमे जले,
सोच ऐसी जग में प्रकाश हो |

सीख बादल की गति से लूं,
स्वच्छता लिये मैं निर्मल बनूं,
नीर बून्द की नित बौछार में,
मन भी बने मेरे विचार हों ||

सीख समुद्र के लहरो से लूं,
ज्वार भाटा के भी समान हो,
न व्देष राग में मन डूबे कभी,
शान्त भाव मे सदा टिका रहे ||

सीख प्रसुन की गंध से लूं,
मन भी प्रफुल्ल बने सदा,
सुगन्धित हो दिशा दिशा,
न मलिनता मेरे मन में हो ||

सीख सदा देशभक्तों से लूं,
दीनदुखियों की नित सेवा करूं,
न झकूं न डरूं दुश्मनो से लड़ूं
लगा रहूं देश सेवा में सदा ||

हे वीणा वाली

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

वीणा वाली शारद मैया, हमको दे दो ज्ञान।
नन्हे नन्हे बच्चे हैं हम, करें आपका ध्यान।।

चरणों में हम शीश झुकाते, करते हैं सम्मान।
हाथ जोड़ कर विनती करते, करेंगे न अपमान।।

दीप ज्ञान की जल जाये माँ, करते सभी प्रणाम।
हम भी आगे बढ़ते जायें, जग में हो सब नाम।।

आशीर्वाद हमें दो माता, करें नेक हम काम।
पढ़ लिख कर विद्वान बनें हम, रौशन कर दो नाम।।

पहेलियाँ

प्रस्तुतकर्ता - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

1. तरुवर में शान इनकी
   सकल अंग कड़ुवापन
   जड़ से पाती औषधि
   बताओ तो बेटा सपन
2. धीरे-धीरे वह चलता है
   पेड़ों पर भी चढ़ता है
   ओढ़ इक काली रजाई
   मजे से खाये रस-मलाई
3. एक डॉक्टर ऐसा भी
   घर आय बिन बुलाय
   फोकट में सुई लगाय
   कभी दर्द कभी खुजलाय
4. हाय ! हाथ की नहीं मिटी मेहंदी
   माथ का सिंदूर हुआ उदास
   इन पंक्तियों में बताओ तो तुम
   किस काव्यरस का है वास
5. एक सोफ़ा आकाश में
   बूझिए भैय्या आप
   जिसमें बैठी दादी माँ
   देखती हमें चुपचाप

उत्तर :- 1. नीम का पेड़. 2. भालू. 3. मच्छर. 4. करूण रस. 5. चाँद.

मम्मी मुझसे रूठना मत

लेखक - निशांत शर्मा

सुबह मुझको यदि स्कूल जाने के लिए जगाओगी और मेरी नींद नहीं खुली तो मम्मी मुझसे रूठना मत. जल्दी-जल्दी ब्रेकफास्ट चाय नाश्ता नहीं किया तो मम्मी मुझसे रूठना मत. स्कूल जाते समय यदि रोया तो मम्मी मुझसे रूठना मत. स्कूल टेस्ट में यदि कम नंबर लाया और अपना टिफिन पूरा नहीं खाया तो मम्मी मुझसे रूठना मत. स्कूल ड्रेस गंदा कर के घर आया, जूता कीचड़ में लबालब कर के लाया तो मम्मी मुझसे रूठना मत. होमेवर्क के समय यदि दोस्तों के साथ खेलने चला गया, टीवी में कार्टून देख लिया तो मम्मी मुझसे रूठना मत. घर का काम नहीं किया अपनी मस्ती में मस्त रहा तो मम्मी मुझसे रूठना मत. पापा से चॉकलेट पिज़्ज़ा बर्गर की फरमाइश की तो मम्मी मुझसे रूठना मत.

फिर भी यदि आप रूठोगी तो आपको सौ नहीं हजार बार मनाऊंगा, क्योंकि मुझे मालूम है कि जो सबसे प्यारा और नजदीक होता है न, लोग उसी से रूठते हैं. रूठने से ही तो प्यार बढ़ता है. मैं अपना नटखट पन जारी रखूंगा आप मुझसे रूठती रहिए. मैं आपको मनाता रहूंगा. बस भगवान, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु से एक ही प्रार्थना करता हूं कि आप जैसी मां मुझे सात जन्मों में बार-बार मिले. मैं ही आपका बेटा बनकर इस दुनिया में जन्म लूं. मम्मी ओ मम्मी.... जैसा भी हूं आपका लाडला हूं, आपका प्यारा हूं. मेरी शैतानी में भी आपके लिए मेरे प्रति और मेरे लिए आपके प्रति असीम प्यार छिपा है. फिर भी कहता हूं मम्मी मेरी तमाम शैतानियों के बावजूद आप मुझसे कभी रूठना मत.

नवाचार - अगर मैं प्रधान पाठक होता तो क्या करता

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - एलन साहू

मार्केटिंग का फंडा है कि सीधे कस्टमर से ही पूछा जाए कि उन्हें किस प्रकार का प्रोडक्ट चाहिए. मैंने यही फण्डा बच्चों के साथ आजमाना चाहा और यह जानने का प्रयास किया कि स्कूल कैसा हो इस बारे में वे क्या चाहते हैं. सो मैंने कक्षा 5वीं के बच्चों को एक प्रश्न दिया - अगर मैं प्रधान पाठक होता, तो क्या - क्या करता?

बच्चों के उत्तर मेरे लिए भी कुछ सीखने लायक थे. बच्चों ने मुझे परोक्ष रूप में बता दिया कि उन्हें किस प्रकार का माहौल, शिक्षा और सुविधा शाला में चाहिए. उनमें से कुछ के उत्तर आप स्वयं भी पढ़ सकतें हैं.

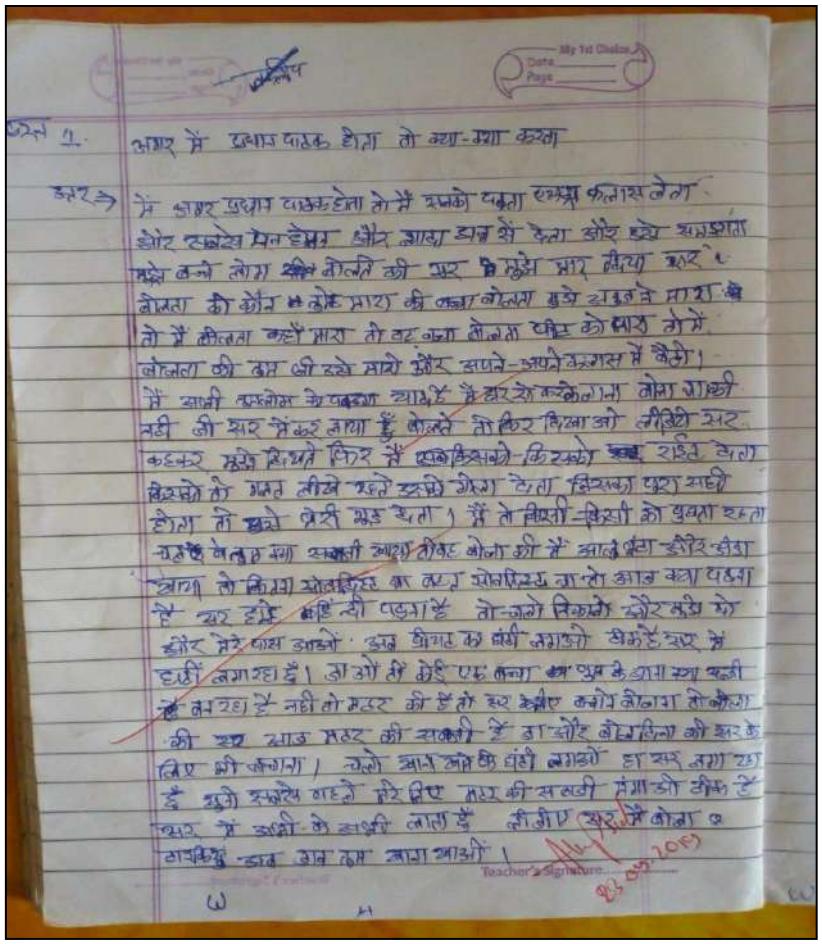

<u>मेरा अनुभव</u> - जो बच्चे हाइपर एक्टिव किस्म के हैं वे स्वयं प्रधान पाठक बनने पर बच्चों को मारपीट कर बल पूर्वक कंट्रोल में रखना चाहते हैं, वहीं जो बच्चे शांत स्वभाव के हैं वे बच्चों को प्रेम पूर्वक समझाकर पढ़ाना लिखाना और अनुशासन में रखना चाहते हैं. इसके साथ ही साथ यह गतिविधि बच्चों के सह-संज्ञानात्मक विकास में मददगार होगी, ऐसा मुझे अनुभव हुआ.

<u>नवाचार - पुस्तकालय</u>

नवाचारी शिक्षक, आलेख एवं चित्र - निरंजन लाल पटेल

शासकीय प्राथमिक शाला लामीखार, संकुल - बोजिया, विकासखंड - धरमजयगढ़, जिला - रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

<u>उद्देश्य</u> - विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, विविधताओं आदि का संग्रह कर छात्र-छात्राओं एवं ग्रामीणों को पुस्तक की सहायता से लाभ पहुंचाना.

<u>उपलब्ध पुस्तकें</u> - ज्ञानवर्धक सामान्य जानकारी, पंचायत से संबंधित, कहानी, कविता, चुटकुले आदि से संबंधित लगभग 2500 पुस्तकें हैं.

<u>क्रियान्वयन</u> - बच्चों व्दारा पुस्तकों की आवक-जावक पंजी संधारण कर क्रियान्वयन किया जाता है.

<u>बच्चों एवं ग्रामवासियों को लाभ</u> -

1. किताबें पढ़ने से छात्र-छात्राओं एवं ग्रामवासियों की सोच में विस्तार हुआ है.
2. सभी के लिए सभी पुस्तकें खरीदना संभव नहीं होता है. इसका लाभ विद्यार्थियों एवं ग्रामीण जनों को मिल रहा है.
3. छात्र-छात्राओं एवं ग्रामवासियों के ज्ञान को विस्तार देने के लिए पुस्तकालय बहुत ही उपयोगी सिध्द हो रहा है.
4. अलग-अलग पुस्तकें पढ़ने में छात्राओ में हर क्षेत्र का ज्ञान बढ़ रहा है.
5. छात्र-छात्राओं एवं ग्रामीण जनों के किताबें पढ़ने से जागरूकता आ रही है.
6. बच्चों को स्वशिक्षा के साधन उपलब्ध हो रहे हैं.
7. शिक्षाप्रद एवं सूचनात्मक सामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध हो रही है.

<u>नवाचार - बाल सरंक्षण कार्नर</u>

लेखक एवं चित्र - रिंकल बग्गा

<u>उद्देश्य</u> - बाल यौन दुर्व्यवहार की रोकथाम प्रशिक्षण के बाद हमारे मन मे विचार आया कि क्यों न हम शाला में बाल सरंक्षण कार्नर बनाएं. इसके बनाने का उद्देश्य है कि बच्चों के साथ साथ समाज मे जागरूकता आए, ताकि समाज मे इस प्रकार की घटना न हो.

<u>क्रियान्वयन</u> - बाल यौन दुर्व्यवहार की रोकथाम प्रशिक्षण से प्राप्त विभिन्न फोटो, पीडीएफ, फ़ाइल को मोबाइल में सेव किया गया. उसके बाद कुछ फोटो का चयन कर फोटोकॉपी करा कर, उन्हें शाला की दीवार में चिपकाया गया.

<u>लाभ</u> - इस कार्नर से बच्चे और पालक निम्लिखित बातों को समझ सकते हैं : -

1. बाल शोषण क्या है
2. गुड टच बैड टच
3. दुर्व्यवहारी कोई भी हो सकता है
4. इंटरनेट में बच्चे क्या न करें
5. पास्को एक्ट क्या है
6. महत्वपूर्ण फोन नंबर
7. समाज की भूमिका क्या है
8. क्या करें क्या न करें
9. विद्यालय स्तर पर बाल सरंक्षण नीति
10. बाल शोषण का प्रभाव

<u>मेरा अनुभव</u> - बाल शोषण रोकने के लिए समाज मे जागरूकता लानी होगी। इससे होनी वाली हानि का हम आकलन नही कर सकते हैं. वर्तमान में जो आकंड़े सरकार ने दिए है वो बहुत ही डरावने है इसलिए इसे हम्हे आज से ही रोकने का प्रयास करना होगा.

चित्र कविता - कुछ काम करो

लेखिका - निधि चतुर्वेदी

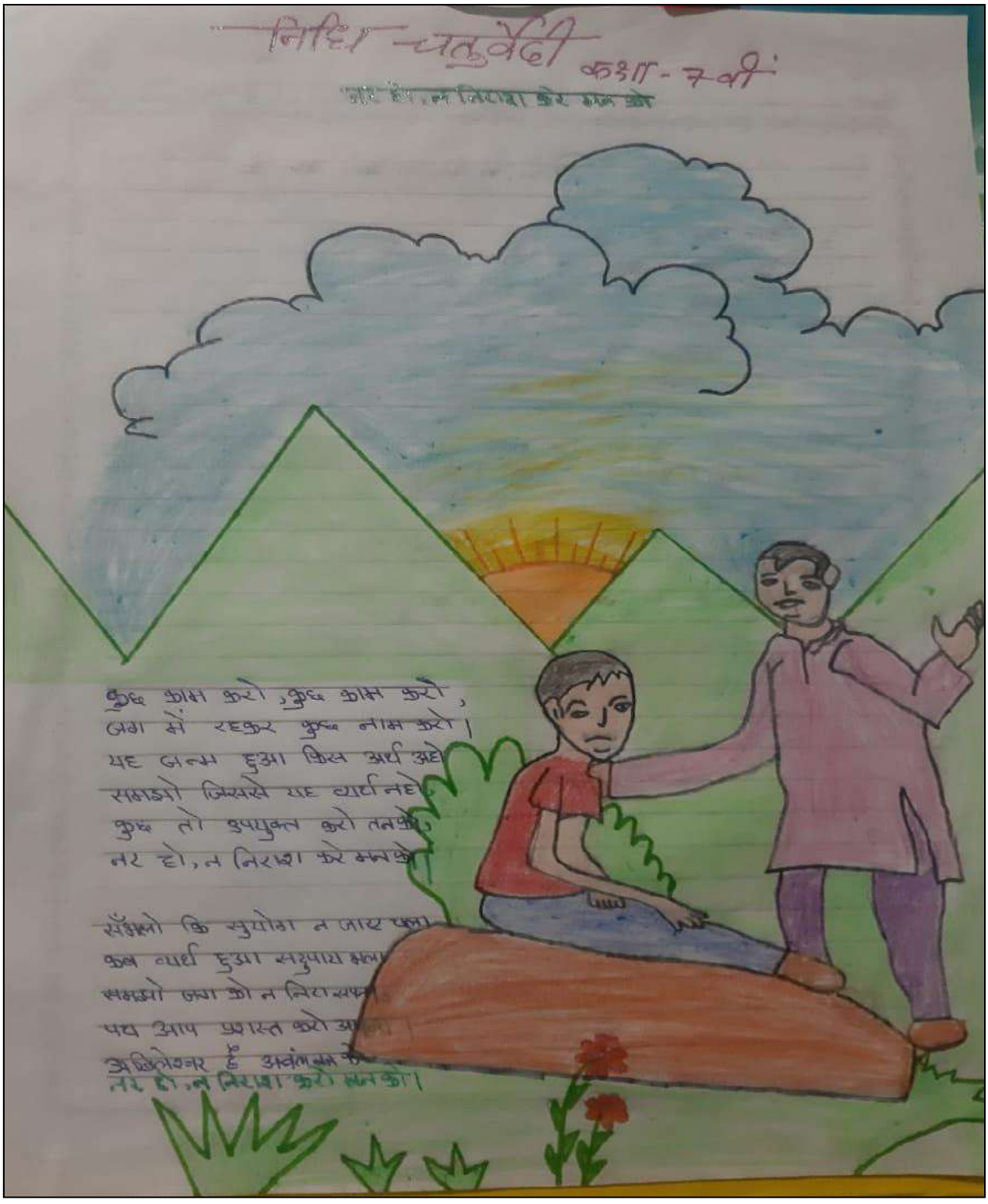

आओ हंस लें

चिंटू: यार बता I am going का मतलब क्या होता है?

टिल्लू: मैं जा रहा हूं.

चिंटू: ऐसे कैसे जाओगे, मैं 20 लोगों से पूछ चूका हूं, सब चले जाने की बात करते हैं जवाब बताकर जाओ.

एक बार बंता को जोर-जोर से रोता हुआ देख संता ने उस से पूछा.

संता: तुम क्यों रो रहे हो?

बंता: मेरे पडोसी रामू का हाथी मर गया है!

संता: तो तुम क्यों रो रहे हो, क्या तुम उस हाथी से बहुत प्यार करते थे?

बंता: नहीं!

संता: तो फिर तुम क्यों रो रहे हो?

बंता: मुझे उसकी कब्र खोदने का काम मिला है!

पति ने पत्नी से कहा पिछले महीने का हिसाब दो.

पत्नी ने हिसाब लिखना शुरू किया और बीच बीच में लिखने लगी भ. जा. कि. गे.

800 भ. जा. कि. गे .

2000 भ. जा. कि. गे .

500 भ. जा. कि. गे .

पति ने पूछा ये भ. जा.कि. गे की क्या है ?

पत्नी : भगवान जाने किधर गए.

आजकल बीवी बात-बात में GST बोलने लगी है...

कैसी भी बहस चल रही हो वो GST बोल कर बहस को ख़त्म कर देती है.

तंग आकर मैंने पूँछ ही लिया: ये तुम बात करते-करते बीच में ही GST बोल कर चल देती हो. क्या मतलब है तुम्हारा?

और उसने जो जवाब दिया वो सुनकर मैं बेहोश होते होते बचा.

G – गलती

S – सिर्फ

T – तुम्हारी है

भाखा जनउला

रचानाकार - दीपक कंवर

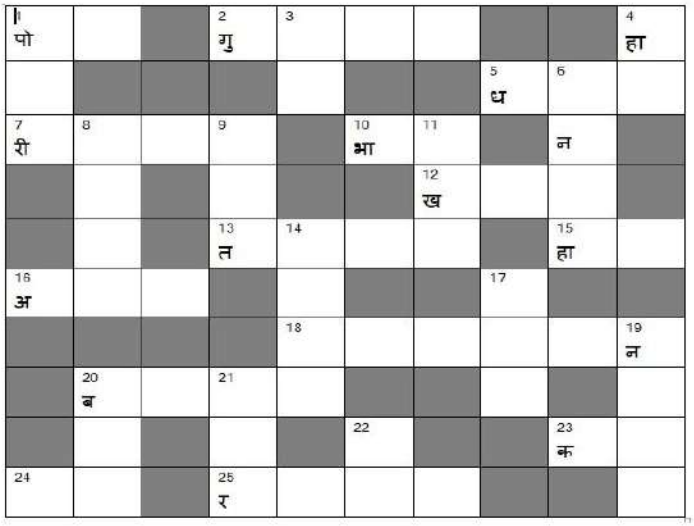

बाएँ से दाएँ - 1. रुई 2. मीठा 5. धामन साँप 7. चमचमाना 10. चाँवल से पका 12. खुजली 13. मांस की सब्जी 15. हड्डी 16. बीमार 18. मृत्यु के तीसरे दिन का कार्य 20. बराती 23. चाचा 24. चाची 25. बचा खुचा

ऊपर से नीचे - 1. बच्चों का खाद्य पदार्थ 3. रास्ता 4. कहावत 6. माँदर बजाने वाला 8. झाग 9. नौटंकी 11. तराजू 14. रथयात्रा 16. विवाह 19. नर्तक 20. एक बर्तन का नाम 21. त्योहार 22. बचाखुचा, अपशिष्ट

उत्तर

1 पो	नी		2 गु	3 र	तु	र			4 हा
ग				दा			5 ध	6 म	ना
7 री	8 ग	बी	9 ग		10 भा	11 त		न्द	
	ज		म्म			12 ख	ज	री	
	ग		13 त	14 र	का	री		15 हा	ड़ा
16 अ	जा	र		जु			17 बि		
				18 ति	ज	न	हा	व	19 न
	20 ब	र	21 ति	या			व		च
	ट		हा		22 खी			23 क	का
24 का	की		25 र	ब्दा	ख	ब्दा			र